Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

# साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-17
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 11 जुलाई से 17 जुलाई 2018 तक
आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी से आषाढ़ शुक्ल पंचमी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

श्रीराम की एक बहन... पृष्ठ- 2

समाज को दिशा.... पृष्ठ- 3

गुर्दों की अक्षमता.. पृष्ठ- 4

श्रीकृष्ण का पवित्र... पृष्ठ- 5

जनता परस्त सरकार... पृष्ठ- 12

- शिक्षा की चिंताजनक स्थिति
- राजनैतिक कर्मज्ञों का अभाव
- लवजिहाद, धर्मान्तरण, निकाह (धोखेबाजी से किये जा रहे इस्लामीकरण) पर तत्काल प्रतिबन्ध की आवश्यकता
- संस्कृत मात्र अतीत की धरोहर ही नहीं, आज की अपरिहार्यता है

## पाक ने एक बार फिर दिया धोखा

### आंतकी शिविरो को ध्वस्त किया जाये – हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

**बीएसएफ** के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि भारतीय सुरक्षा बलों ने सीमा पर संघर्ष विराम की पवित्रता बनाए रखी लेकिन दुर्भाग्य से पाकिस्तान ने ऐसा नहीं किया। अतिरिक्त महानिदेशक पश्चिमी कमान के एन चौबे ने पाकिस्तान रेंजर्स द्वारा गोलीबारी में बीएसएफ के चार कर्मियों के मारे जाने को धोखा बताया। उन्होंने कहा कि पड़ोसी देश ने जो किया यह उसका काम था और हमले पर हमारी ओर से जवाब देना हमारा काम है। चौबे ने यह भी कहा कि घटना को लेकर बीएसएफ पाकिस्तानी पक्ष से अपना विरोध जताएगा। शेष पृष्ठ 11 पर

## पाकिस्तान के छक्के छुड़ाने आ रहा है

### विश्व समुदाय मिलकर करे आंतकवाद का सफाया – हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

**एलओसी** पर पाकिस्तान लगातार सीजफायर का उल्लंघन कर रहा है। इसमें अब तक कई भारतीय जवान शहीद हुए हैं। हालांकि भारत की जवाबी कार्रवाई में उसके पसीने छूट जाते हैं, उसके रेंजर भारतीय अफसरों को फोन कर गोलाबारी रोकने के लिए गिड़गिड़ाते हैं। इस बीच एक बड़ी खबर यह है कि अमेरिका ने भारत के साथ रक्षा संबंध और मजबूत करते हुए अपने ६ अत्याधुनिक बोइंग एच ६४ई अपाचे हेलीकाप्टर देने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इससे भारतीय फौज की ताकत काफी बढ़ जाएगी। इन्हें दुनिया के सबसे बेहतरीन अटैक हेलीकाप्टर माना जाता है। इसके साथ ही अमेरिकी विदेश विभाग ने ४ एएन/एपीजी–७८ फायर कंट्रोल रडार, १८० एजीएम–११४एल–३ हेलफायर लांगबो मिसाइल, ६० एजीएम–११४आर–३ हेलफायर टू मिसाइल, २०० स्ट्रिंगर ब्लॉक वन ६२ एच मिसाइल, एम्बेडेड जीपीएस इंटीरियल नैविगेशन सिस्टमए ३० एमएम कैनन, ट्रांसपोर्डर, सिमुलेटर, ट्रेनिंग इक्विमेंट देने को भी तैयार हो गया है। इन पूरे सैन्य साजोसामान में कुल ६३० मिलियन डॉलर खर्च होंगे। अपाचे हेलीकॉप्टर को बोइंग कंपनी बनाती है। इस कंपनी के साथ देश के टाटा ग्रुप की साझेदारी भी है। दोनों कंपनियां मिलकर भारत में हेलीकॉप्टर का निर्माण कर रही हैं। अमेरिका के शेष पृष्ठ 10 पर

# श्रीराम की एक बहन भी थी

**श्रीराम** के माता–पिता, भाइयों के बारे में तो प्रायः सभी जातने हैं लेकिन बहुत कम लोगों को यह मालूम हैं कि राम की एक बहन भी थी जिनका नाम शांता था। वे आयु में चारों भाइयों से काफी बड़ी थीं। उनकी माता कौशल्या थीं। उनका विवाह कालांतर में श्रृंग ऋषि से हुआ था। राजा दशरथ और कौशल्या की पुत्री थी शांता। ऐसी मान्यता है कि एक बार अंगदेश के राजा रोमद और उनकी रानी वर्षिणी अयोध्या आए। उनके कोई संतान नहीं थी। बातचीत के दौरान राजा दशरथ को जब यह बात मालूम हुई तो उन्होंने कहा, मैं मेरी बेटी शांता आपको संतान के रूप में दूंगा। रोमषद और वर्षिणी बहुत खुशी हुए। उन्हें शांता के रूप में संतान मिल गई। उन्होंने बहुत स्त्रेह से उसका पालन–पोषण किया और माता–पिता के सभी कर्तव्य निभाए। एक दिन राजा रोमपद अपनी पुत्री से बातें कर रहे थे। तब द्वार पर एक ब्राह्मण अया और उसने राजा से प्रार्थना की कि वर्षा के दिनों में वे खेतों की जुताई में शासन की ओर से मदद प्रदान करें। राजा को यह सुनाई नहीं दिया और वे पुत्री के साथ बातचीत करते रहे। द्वार पर आए नागरिक की याचना न सुनने से ब्राह्मण को दुख हुआ और वे राजा रोमपद का राज्य छोड़कर चले गए। वे इंद्र के भक्त थे। अपने भक्त की ऐसी अनदेखी पर इंद्र देव, राजा रोमपद पर क्रुद्ध हुए और उन्होंने पर्याप्त वर्ष नहीं की। अंग देश में नाम मात्र की वर्षा नहीं की। अंग देश में नाम मात्र की वर्षा हुई। इससे खेतों में खड़ी फसल मुर्झाने लगी।

इस संकट की घड़ी में राजा रोमपद श्रृंग ऋषि के पास गए और उनसे उपाय पूछा। ऋषि ने बताया कि वे इंद्र देव को प्रसत्र करने के लिए यज्ञ करें। ऋषि ने यज्ञ किया और खेत–खलिहान पानी से भर गए। इसके बाद श्रृंग ऋषि का विवाह शांता से हो गया और वे सुखपूर्वक रहने लगे। कश्यप ऋषि के पौत्र थे श्रृंग ऋषि पौराणिक कथाओं के अनुसार श्रृंग ऋषि विभण्डक तथा अप्सरा उर्वशी के पुत्र थे। विभण्डक ने इतना कठोर तप किया कि देवतागण भयभीत हो गये और उनके तप को भंग करने के लिए उर्वशी को भेजा। उर्वशी ने उन्हें मोहित कर उनके साथ संसर्ग किया जिसके फलस्वरूप श्रृंग ऋषि की उत्पति हुयी। श्रृंग ऋषि के माथे पर एक सींग शेष पृष्ठ 11 पर

# श्री रामेश्वर ज्योतिर्लिंग

**भारतमाता** के दक्षिण सिरे पर हिन्द महासागर और बंगाल के उपसागर के मिलन स्थल पर श्री रामेश्वर ज्योतिर्लिंग बिराजमान है। इस महापावन ज्योतिर्लिंग की स्थापना स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामने की थी। यह हरि और हरके मिलन का महापावन तीर्थ है। जो हिन्दू सभ्यता के विभिन्न संप्रदायों की एकसूत्रता का परिचायक है। श्री रामेश्वर ज्योतिर्लिंग की पूजा में गंगाजल अभिषेक का विशेष महत्त्व है। जो भारत की भौगोलिक विविधताओं के मध्य मूलभूत सांस्कृतिक एकता के सबसे बड़ा प्रमाण माना जाता है। भगवान श्री राम शिवजी से वरदान पाकर रावण का वध करते है। राम न्याय और सत्य के प्रतिक है और रावण अहंकार एवँ अन्याय का प्रतिक है। रावण भी बड़ा शिवभक्त था। परंतु भगवान शिव ने सत्य का पक्ष लिया एवँ श्री रामचंद्र को विजय का वरदान दिया। भगवान राम की अयोध्या से लंका तक की अरण्य यात्रा भारतवर्ष के सामाजिक एवँ सांस्कृतिक एकीकरण की महान कार्य योजना थी। उनका वह सांस्कृतिक सेतुबंध आज भी हमारे विजिगिषु जीवनदर्शन के स्वरूप विद्यमान है। यहाँ एक और अवलोकन प्रस्तुत है। हमारे विशाल राष्ट्र के उपरी छोर पर केदारनाथ उत्तर के प्रहरी के रूप में बिराजे है तो दक्षिण में भगवान रामेश्रवर! जो पूरे राष्ट्र को शिवजी की दिव्य चेतना के सूत्र में जोड़े रखते हैं! हमारे ऋषियों की यह विलक्षण राष्ट्रधर्मी आर्षदृष्टि को वंदन करें।

# साप्ताहिक राशिफल

**मेष :** इन सप्ताह रोजी व रोजगार में प्रगति होगी। किसी नजदीकी के विश्वास घात के कारण हानि भी हो सकती है। परिवारिक सुखों के लिए यह समय श्रेष्ठ साबित होगा। नौकरी पेशा वालों को पदोन्नति के योग बन रहे है। पाइल्स के रोगी अपने स्वास्थ्य पर विशेष सावधानी बरतें।

**वृष :** इस सप्ताह कुछ लोगों की आर्थिक मामलों में उन्नति होगी। परिवार की दृष्टि से यह समय अच्छा है। किसी अधिकारी के सहयोग से पुराना कार्य पूर्ण होगा। किसी कारणश कुछ लेगों में निराशा के भाव उत्पन्न हो सकते है।

**मिथुन :** इस सप्ताह रोजी व रोजगार की तलाश में भटक रहें नवयुवकों को अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। अनचाहे समबन्धों के प्रति उदासीनता ही उचित समाधान है। व्यवसायी वर्ग अपने सामान की स्वंय देखभाल करें अन्यथा चोरी होने की आशंका है।

**कर्क :** यह सप्ताह आपके लिए मिला जुला फल देने वाला रहेगा। यदि कही पर विवाद में फंसे हुए है, तो बाहर निकलना कठिन रहेगा। जरूरी कार्यो के प्रति ध्यान दें और अपने काम से काम से रखेंगे तो बेहतर रहेगा। आय की अपेक्षा व्यय की अधिकता बनी रहेगी।

**सिंह :** इस सप्ताह साझेदारी के कार्यो में लाभ हो सकता है। १२ वें स्थान पर शनि होने से अचानक कार्यो में अड़चने उत्पन्न हो सकती है। लाभकारी योजनाओं प्रति मन ललायित रहेगा। व्यर्थ की बातों को लेकर जीवन साथी से टकराव हो सकता है।

**कन्या :** इस सप्ताह आपके धन, सम्पत्ति, मान, सम्मान आदि में वृद्धि करायेगा। परिवार में आपसी मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। आपके पैरों मे किसी कारण वश पीड़ा हो सकती हैं। बच्चों को पानी से सावधानी बरतने की आवश्कता है। किसी लम्बे समय से बिछड़े हुए व्यक्ति से मुलाकात होगी।

**तुला :** इस सप्ताह कुछ लोगों को किसी न किसी रूप से मानसिक तनाव झेलना पडेगा। कुछ लोगों को सरकारी मामलों में सावधान रहने की आवश्यकता है। जो लोग बीपी व शुगर के मरीज हैं वो अपने आहार पर विशेष ध्यान दें। धन आयेगा लेकिन तेजी से खर्च भी होगा।

**वृश्चिक :** इस सप्ताह आय व व्यय के मध्य संतुलन बिगड़ेगा। इस समय आप सोचेगे कुछ, होगा कुछ। यदि आप किसी दूसरे की मदद करने जा रहें है, तो इस समय पूरी सावधानी बरतें क्योंकि आपके स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन में सामन्जस्य नहीं बन पायेगा।

**धनु :** इस सप्ताह धन की स्थिति में काफी उतार–चढ़ाव रहने की सम्भावना है। मान–प्रतिष्ठा का लाभ मिल सकता है। कुछ लोग अकेलापन महसूस करेंगे। नये व्यापार में कोई रिस्क न उठाये। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। किसी मित्र या रिश्तेदार के आने से खुशी का माहौल रहेगा।

**मकर :** यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से अच्छा रहेगा। नकारात्मक स्वभाव रहने के कारण सन्तान से झगड़ा हो सकता है। मातृपक्ष को शारीरिक कष्ट हो सकता है। कुछ लोगों को घर में किसी धार्मिक कार्य का आयोजन होगा। भाग्य एक तरफ आपके आय में बढोत्तरी करेगा

**कुम्भ :** इस सप्ताह नौकरी में विरोधी आपको परेशान करेंगे जिससे मानसिक पीड़ा बनी रहेगी। कुछ लोगों का स्थानान्तरण होने की सम्भावना है। कुछ लोगों को घर–मकान व वाहन आदि के योग बन रहे है। परिवार में मांगलिक कार्य होगें।

**मीन :** इस सप्ताह आप–अपनी मर्जी के खिलाफ कोई भी कार्य न करें वरना मुसीबत में पड़ सकते है। मकान, वाहन आदि पर धन का खर्च होगा। जो लोग किसी मित्र या रिश्तेदार से किसी लाभ की आशा में है। उनकी इच्छा पूरी होगी।

**पं० दीनानाथ तिवारी**

# श्रीमद्भगवत गीता

**यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः।**
**दीयते च परिक्लिष्ठं तद्दानं राजसं स्मृतम्।।**

किन्तु जो दान क्लेशपूर्वक तथा प्रत्युपकार के प्रयोजन से अथवा फल को दृष्टि में रखकर फिर दिया जाता है, वह दान राजस कहा गया है।२१।।

**अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्र दीयते।**
**असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्।।**

जो दान बिना सत्कार के अथवा तिरस्कार पूर्वक अयोग्य देश–काल में और कुपात्र के प्रति दिया जाता है, वह दान तामस कहा गया है।।२२।।

**ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।**
**ब्राह्मणास्तेन वेदाश्र यज्ञाश्र विहिताः पुरा।।**

ॐ, तत्, सत्–ऐसे यह तीन प्रकार का सच्चिदानन्दघन ब्रह्म का नाम कहां है; उसी से सृष्टि के आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादि रचे गये।।२३।।

**तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः।**
**प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम्।।**

इसलिये वेद–मन्त्रों का उच्चारण करने वाले श्रेष्ठ पुरुषों की शास्त्रविधि से नियत यज्ञ, दान और तपरूप क्रियाएँ सदा 'ॐ' इस परमात्मा के नाम को उच्चारण करके ही आरम्भ होती हैं।।२४।।

3
साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 11 जुलाई से 17 जुलाई 2018 तक

अध्यक्षीय

# समाज को दिशा देने की है जरूरत

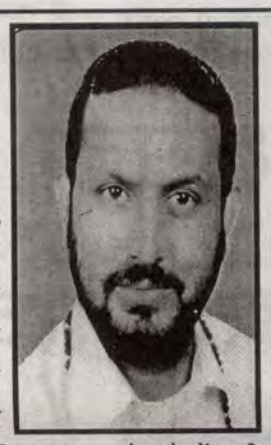



**हमारा** समाज एक खास तरह के संकट से गुजर रहा है। यदि आप फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया के बहसों पर गौर करेंगे, तो लगेगा कि हम एक विचित्र समाज में रह रहे हैं। लोग बीच–बहस में उग्र हो जाते हैं, गाली–गलौज तक शुरू हो जाता है। आप ऐसा नहीं कह सकते हैं कि ऐसा करनेवाले लोग अनपढ़ हैं। बल्कि अक्सर देखने में यही आ रहा है कि पढ़े–लिखे लोगों के बीच ऐसा ज्यादा होता है। ऐसा क्यों हो रहा है, एक रोचक व्याख्या तो यह है कि पहली बार हमारे समाज में सार्वजनिक मोर्चे पर बोलने की संभावना बढ़ी है। जिसे मर्जी फेसबुक पर लाइव होकर अपनी बात दुनिया तक पहुंचा सकता है, ऐसे में हर तरह की भावनाओं का बेतरतीबी से बाहर आना लाजिमी है। लेकिन इसका ज्यादा महत्वपूर्ण कारण लगता है समाज का साहित्य से सरोकार खत्म हो जाना। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जो तहजीब लोगों में आयी थी, उसके पीछे साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका थी। साहित्य के माध्यम से समाज में बड़ी बहसें होती थीं, उस समय की साधारण पत्रिकाओं को भी अगर आज ध्यान से पढ़ें। तो उनमें आपको दार्शनिक बहसों का स्वाद मिल जायेगा, कहते हैं कि एक बार मुल्कराज आनंद ने गांधीजी से पूछा कि उन्हें हिंदी तो ठीक से नहीं आती है, फिर क्या करना चाहिए। गांधीजी का जवाब था– भाषा की चिंता मत करो, जितना ज्यादा हो सके साहित्य की रचना करो। ताकि हमारी बातें लोगों के हृदय तक पहुंच सके। साहित्यकारों ने यह भूमिका खूब निभायी और लोगों ने जीभर कर उन्हें पढ़ा भी। कई साहित्यिक रचनाएं प्रतिबंधित भी हुई। इसके विपरीत आजकल हमारे समाज में साहित्य और आम लोगों के बीच एक दूरी सी बन गई है। ऐसा क्यों हो गया है, क्या साहित्य में धार खत्म हो गयी है या फिर पाठकों की रुचि ही बदल गयी है। साहित्य, खासकर हिंदी साहित्य, की लोकप्रियता क्यों घट गयी है, कुछ लोग कहते हैं कि मनोरंजन के कई और साधन हो गये हैं। लेकिन साहित्य केवल मनोरंजन का साधन मात्र तो नहीं हैं। शायद साहित्यकार उनकी भाषा में उनकी बहस में हस्तक्षेप करने से चूक रहे हैं, जैसा स्वतंत्रता संग्राम के साहित्यकार कर पा रहे थे। आप प्रसाद के चंद्रगुप्त नाटक को पढ़ें, तो आपको भारतीय बौद्धिक परंपरा के स्वराज की लड़ाई दिख जायेगी। हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, स्वयंप्रभा समुज्ज्वल/स्वतंत्रता पुकारती मिल जायेगी। ये मुद्दे उस समय बहस में थे, आप अगर कहानी सम्राट प्रेमचंद को पढ़ें, तो आधुनिकता से भारतीय समाज का संघर्ष नजर आयेगा। क्या आज का साहित्य आज की तमाम जरूरी बहसों को समेट नहीं पा रहा है, यह एक बड़ा सवाल है। अगर दुनिया के दूसरे हिस्से को देखें, तो बात समझ में आयेगी कि हम कहां भूल कर रहे हैं। फ्रांस का एक साहित्यकार है माइकल ओलेबेक जिसकी पुस्तकें एटोमाइज्ड और सबमिशन बेहद चर्चित रही हैं। पहली पुस्तक में उसने फ्रांस के समाज का रेखाचित्र खींचकर रख दिया है। हमारे समाज का सोशल मीडिया, जो सचमुच में समाज का दर्पण होता जा रहा है, हमें विक्षिप्त और बदमिजाज न दिखा सके, तो साहित्य और साहित्यकारों से समाज का संवाद फिर से चालू करना होगा। समाज के उन पहलुओं पर लेखकों को धारदार बहस चलानी होगी, जो आम लोगों का सवाल हो साहित्य को मध्यम वर्गीय चरित्र से परे जाना होगा। लेकिन इसमें समाजशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों की भूमिका भी कुछ कम नहीं है। इलाहाबाद के सिविल लाइन जहां भारत के तमाम बड़े साहित्यकार एक जमाने में रहा करते थे और तीनमूर्ति भवन, जहां भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू रहते थे, के बीच सीधा संवाद एक समय में संभव था। क्या आज ऐसा संभव है।

**राष्ट्रीय उद्‌बोधन**
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

# शिक्षा की चिंताजनक स्थिति

**किसी** भी देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति उस देश की शिक्षा पर निर्भर करती है, शिक्षित समाज ही आगे बढ़ता है। अच्छी शिक्षा के बगैर बेहतर भविष्य की कल्पना नहीं की जा सकती, अगर देश की शिक्षा नीति अच्छी है। तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। अगर शिक्षा नीति अच्छी नहीं होगी, तो विकास की दौड़ में वह देश पीछे छूट जायेगा। राज्यों के संदर्भ में भी यह बात लागू होती है। यही वजह है कि शिक्षा की वजह से हिंदी पट्टी के राज्यों के मुकाबले दक्षिण के राज्य हमसे आगे हैं, हम सब यह बात बखूबी जानते हैं, बावजूद इसके पिछले ७० वर्षो में हमने अपनी शिक्षा व्यवस्था की घोर अनदेखी की है। हाल में झारखंड, बिहार और सीबीएसइ समेत अनेक बोर्डों के नतीजे आये हैं, लेकिन एक गंभीर बात उभरकर सामने आयी है कि इस बार विज्ञान में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों का प्रतिशत बहुत कम है। यह चिंताजनक स्थिति है, क्योंकि देश के अधिकांश बच्चे विज्ञान पढ़ रहे हैं और इंजीनियर बनना चाहते हैं। दूसरी ओर आइटी क्षेत्र की जानी–मानी कंपनी महिंद्रा के सीइओ सीपी गुरनानी ने बहुत गंभीर बयान दिया है। उनका कहना था कि आइटी क्षेत्र के ६४ फीसदी इंजीनियरिंग ग्रेजुएट बड़ी भारतीय आइटी कंपनियों के काबिल ही नहीं हैं। गुरनानी कहते हैं कि नयी तकनीक के क्षेत्र में प्रवेश करना भारतीय आइटी कंपनियों के लिए बड़ी चुनौती है, लेकिन जब इन सब बातों को देखते हुए नौकरी की बात आती है, तो बड़ी आइटी कंपनियां ६४ फीसदी आइटी ग्रेजुएट भारतीयों को इसके योग्य नहीं पाती हैं। गुरनानी का कहना है कि नासकाम के अनुसार २०२२ तक साइबर सुरक्षा में लगभग ६० लाख लोगों की जरूरत पड़ेगी, लेकिन हमारे पास दक्ष लोगों की कमी है। देश के लिए ये संकेत अच्छे नहीं हैं, देश में अब भी बहुत बड़ी संख्या में बच्चे इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं, हालांकि पहले की तुलना में इसमें कमी आयी है। इसकी एक वजह गली–कूचे में खुले इंजीनियरिंग कालेज तो हैं ही। इंजीनियरों की मांग में भारी कमी भी इसकी वजह है, तकनीकी शिक्षा की नियामक संस्था ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्नकिल एजुकेशन के अनुसार हाल में लगभग २०० इंजीनियरिंग कॉलेजों ने बंद करने के लिए आवेदन किया है। इन कॉलेजों के बंद हो जाने के बाद इंजीनियरिंग की तकरीबन ८० हजार सीटों में कमी आ जायेगी। ऐसा आकलन है कि पिछले चार वर्षों में इंजीनियरिंग कॉलेजों में तकरीबन ३.१ लाख सीटें कम हुईं हैं, क्योंकि इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने वाले छात्रों की संख्या में लगातार कमी आ रही है। एआइसीटीई के अनुसार इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने वाले हर साल लगभग ७५ हजार छात्र कम हो रहे हैं। कुल मिलाकर हालात यह बता रहे हैं कि शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार का वक्त आ गया है। हमारे यहां हर साल एक कहानी दोहरायी जाती है कि किसी–न–किसी बोर्ड में कोई परचा लीक हो जाता है। इस बार सीबीएसई की १२वीं की परीक्षा में पर्चा लीक हुआ और बच्चों को अर्थशास्त्र का इम्तिहान दोबारा देना पड़ा। अक्सर हम बोर्ड परीक्षाओं की अनियमितताओं पर रोकने में असफल हो जाते हैं। यह खबर न केवल बच्चों, बल्कि उनके माता–पिता के लिए भी तनाव पैदा करती है। ये परीक्षाएं कितनी अहम हैं कि इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि बच्चों को परीक्षा दिलवाने के लिए माता–पिता अपने दफ्तरों से छुट्टी लेते हैं। हम सब जानते हैं कि १०वीं और १२वीं की परीक्षाओं को लेकर बच्चे भारी तनाव में रहते हैं। कई बार यह तनाव दुखद हादसों को जन्म दे देता है, लेकिन हमारी व्यवस्था बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ करने वाले अपराधियों को कड़ी सजा नहीं दिलवा पाती। हमारे विभिन्न बोर्ड में कोई एकरूपता भी नहीं है, सीबीएसइ के छात्रों के नंबर देखिए। उन्हें कितनी उदारता से नंबर दिये जाते हैं। टापर ५०० में ४९६ नंबर ला रहे हैं, ६० फीसदी नंबर लाने वाले बच्चों की संख्या बड़ी है। विज्ञान को तो छोड़िए आर्टस के बच्चे भी १०० में १०० नंबर लाते हैं। दूसरी ओर बिहार और झारखंड बोर्ड के नंबरों से उनकी तुलना करें, तो वे आस पास भी नहीं है। दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों में जहां प्रवेश का एक बड़ा आधार नंबर होते हैं, वहां सीबीएसइ बोर्ड के बच्चों का बोलबाला रहता है। हम सब यह बात जानते हैं कि बच्चों का पढ़ाना कोई आसान काम नहीं है, बच्चे, शिक्षक और अभिभावक शिक्षा की तीन महत्वपूर्ण कड़ी हैं। इनमें से एक भी कड़ी के ढीला पड़ने पर पूरी व्यवस्था गड़बड़ा जाती है। शिक्षक शिक्षा व्यवस्था की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी हैं, शिक्षा के बाजारीकरण के इस दौर में न तो शिक्षक पहले जैसे रहे और न ही छात्रों से उनका पहले जैसा रिश्ता रहा। पहले शिक्षक के प्रति न केवल विद्यार्थी, बल्कि समाज का भी आदर और कृतज्ञता का भाव रहता था। अब तो ऐसे आरोप लगते हैं कि शिक्षक अपना काम ठीक तरह से नहीं करते। इसमें आंशिक सच्चाई भी है कि बड़ी संख्या में शिक्षकों ने दिल से अपना काम करना छोड़ दिया है, वे अपने दायित्व का निर्वाह नहीं कर रहे हैं। पर यह भी सच है कि प्रशासन लगातार शिक्षकों का इस्तेमाल गैर शैक्षणिक कार्यो में करता है। गौर करें तो पायेंगे कि टॉपर बच्चे पढ़ लिखकर डॉक्टर, इंजीनियर और प्रशासनिक अधिकारी तो बनना चाहते हैं। लेकिन कोई शिक्षक नहीं बनना चाहता। पूरी व्यवस्था पर पूरी तरह से समीक्षा की जरूरत है, तभी हम देश और देश की पीढ़ी को सशक्त बना सकेंगे।

**राष्ट्रीय आह्वान**
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

# गुर्दों की अक्षमता एक गंभीर और खतरनाक रोग

✍ डॉ. प्रेमचन्द्र स्वर्णकार

(पिछले अंक का शेष)

**रोग के लक्षण एवं चिन्ह**

शुरू में रोगी में स्पष्टतः कोई लक्षण नहीं मिलते तो प्रायः कई रोगियों में डायबिटीज या हाई ब्लडप्रेशर जैसी बीमारियाँ अवश्य होतीहैं और पैथोलॉजी की जाँचों में यूरिया या क्रिटीनिन का स्तर बढ़ा हुआ मिलता है। रात्रि में रोगी को कई बार पेशाब जाना पड़ता है। क्योंकि गुर्दों की मूत्र सांद्रता बनाने की क्षमता का ह्रास हो जाता है।

इसके अलावा मूत्र में एल्बूमिन की मात्रा भी उपस्थित रहती है। साथ ही रोगी में रक्त की कमी के लक्षण भी मिलते हैं। रोगी को थकान महसूस होने के साथ श्वास संबंधी तकलीफें जैसे साँस फूलना इत्यादि भी होती है।

इसके अलावा पेशियों में दर्द, सुस्ती, उल्टियाँ, शरीर में खुजली होना, बेहोशी आना (यहाँ तक कि कोमा की स्थिति बन सकती है।) इत्यादि लक्षण मिलते हैं। कुछ का वर्णन निम्न है–

**(१) एनीमिया :** इन रोगियों में खून की कमी का एक कारण यह होता है कि रक्त बनने की प्रक्रिया इरिथ्रोपॉयटिन नामक हार्मोन की कमी से बहुत धीमी हो जाती है। चूँकि इरिथ्रोपॉयटिन को गुर्दे ही बनाते हैं लेकिन वे इस रोग के कारण पर्याप्त हार्मोन का निर्माण नहीं कर पाते इसलिए इलाज में इरिथ्रोपॉयटिन भी रोगी को दिया जाता है।

**(२) गुर्दों की ऑस्टियोडिस्ट्रॉफी :** गुर्दों की जीर्ण अक्षमता में इस तरह की हड्डियों की बीमारी भी हो जाती है। इसमें हड्डियाँ कमजोर और भुरभुरी और कम घनत्व की हो जाती हैं। यह विटामिन 'डी' की कमी से होती है।

**(३) पेशियों की बीमारियाँ :** इस तरह की गुर्दों की खराबी में शरीर की पेशियाँ भी प्रभावित होती हैं। उनमें दर्द और ऐंठन होती है। विटामिन 'डी' एवं अन्य पोषक पदार्थ की कमी इसके लिए जिम्मेदार होती है। रात्रि में पैरों में अत्यधिक दर्द और ऐंठन होती है।

**(४) तंत्रिका संबंधी रोग :** इसमें कुछ तंत्रिका संबंधी जटिलताएँ भी हो जाती हैं। पैरों की शून्यता या गतिहीनता इत्यादि लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। रक्त में यूरिया का स्तर बढ़ा रहने से दस्त लगना, पाचनक्रिया धीमी होने, जैसी शिकायतें भी हो जाती हैं।

**(५) अंतःस्रावी ग्रंथियों के रोग :** कई तरह की हार्मोन्स से संबंधित गड़बड़ियाँ भी रोगी के शरीर में आ जाती हैं। जैसे कि प्रोलेक्टिकल

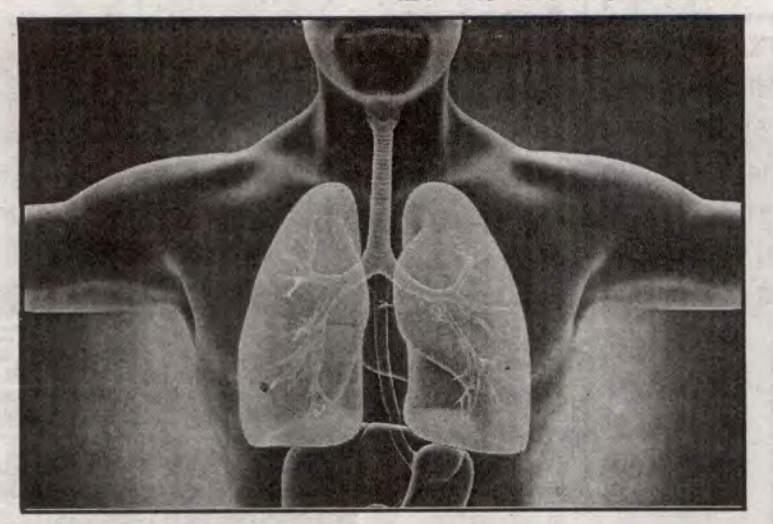

नामक हार्मोन का ज्यादा बनना पैराथायरॉइड ग्रंथि के स्राव में असमान्यता, महिला रोगियों में मासिक धर्म न होना, यौन क्षमता का ह्रास इत्यादि परेशानियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस तरह की गड़बड़ियों अथवा बीमारियों में ब्रोंक्रिप्टीन नामक दवा उपयोगी साबित हुई है। डॉयलेसिस से भी इन स्थितियों में सुधार आता है।

**(६) हृदय धमनी रोग :** गुर्दों की जीर्ण अक्षमता वाले ८० प्रतिशत रोगियों को हाई बी.पी. की शिकायत हो जाती है अर्थात् उनका ब्लडप्रेशर बढ़ जाता है और इसका कारण होता है शरीर में नमक का रूकना। इसके अलावा गुर्दों द्वारा रेनिन का अधिक मात्रा में उत्पन्न करना भी ब्लडप्रेशर का स्तर बढ़ाता है। धमनियों में कोलेस्ट्रॉल जमने की प्रक्रिया भी रक्तचाप बढ़ने के कारण तेज हो जाती है। हृदय को घेरकर उसे सुरक्षित रखने वाली झिल्ली में सूजन भी आ सकती है। इसे पैरीकार्डाईटिस कहते हैं।

**(७) शरीर में अम्लता का बढ़ना :** गुर्दों के कार्यों में कमी से चयापचय से संबंधित अम्लता बढ़ जाती है। शुरू में तो इसके लक्षण नहीं मिलते लेकिन यह अम्लता शरीर की हड्डियों को प्रभावित करती है। साथ ही गुर्दों की कार्यक्षमता को और भी कम कर देता है।

**(८) संक्रमण :** इस रोग में रोग प्रतिरोधक शक्ति कम हो जाती है जिससे कई तरह के संक्रमण जैसे मूत्रमार्ग का संक्रमण, हृदय झिल्ली का संक्रमण इत्यादि हो जाते हैं।

**इलाज**

गुर्दों की पुरानी या जीर्ण खराबी में कई प्रकार से इलाज किया जाता है। क्योंकि रोग में जटिलताएँ अधिक होती हैं। अतः रोग के कारणों को पहचानकर उन्हें दूर करने के साथ ही रोग की जटिलताओं का भी इलाज जरूरी होता है। इलाज के लिए चिकित्सा विशेषज्ञ निम्न बिंदुओं को ध्यान में रखते हैं–

- ❖ गुर्दे की बीमारी के कारण का पता लगाकर उन्हें दूर करना।
- ❖ गुर्दों को और अधिक नुकसान से बचाना।
- ❖ बीमारी के जो कारक सामान्य स्थिति में आ सकते हैं उन्हें सामान्य बनाना। उदाहरणार्थ बढ़े हुए ब्लडप्रेशर को दवाओं द्वारा सामान्य स्थिति में लाया जाता है।
- ❖ बीमारी के शरीर पर पड़ रहे दुष्प्रभावों में कमी लाना।
- ❖ आवश्यकतानुसार–कृत्रिम डॉयलेसिस देना या फिर गुर्दों को प्रत्यारोपित करना व जिन जाँचों द्वारा गुर्दों की तीव्र अक्षमता के कारणों की पहचान करते हैं उन्हीं जाँचों से जीर्ण बीमारी के कारणों का भी चिकित्सक पता लगा लेते हैं। (जाँचों का विवरण पूर्व में दिया जा चुका है।)

वैसे इस बीमारी का अंतिम इलाज गुर्दों का प्रत्यारोपण ही है। जब क्रिटीनिन अधिक मात्रा में बढ़ जाता है तो डॉयलेसिस तो देते ही हैं लेकिन स्थायी इलाज के लिए विशेषज्ञ एक गुर्दा बदलने की सलाह भी देते हैं। लेकिन जब ये दोनों तरह के इलाज संभव नहीं हो पाते तो फिर रोगी की जान को खतरा उत्पन्न हो जाता है। इलाज का संक्षिप्त विवरण निम्न है–

**१. ब्लडप्रेशर पर कन्ट्रोल :** उच्च रक्तचाप के स्तर को १३०/८५ तक ले आते हैं जो गुर्दों के कार्यों को एक सीमा तक सुधारता है। विशेषकर मधुमेह के रोगी में ब्लडप्रेशर पर नियंत्रण अधिक उपयोगी पाया गया है। जिन रोगियों में पेशाब द्वारा अत्यधिक प्रोटीन की मात्रा निकलती है उनको रक्तचाप का स्तर और भी नीचे तक (१२५/७५) तक ले आते हैं। रक्तचाप का बढ़ा हुआ स्तर गुर्दों की खराबी वाले रोगों में हृदय को प्रभावित करता है। अतः रक्तचाप पर नियंत्रण जरूरी है।

**२. खुराक :** रोगी को प्रोटीन की मात्रा कम दी जाती है। लेकिन कम प्रोटीन खाने से रोगी को कुपोषण भी हो सकता है। अतः रोगी को बहुत अधिक मात्रा में प्रोटीन न देकर ६० ग्रा. प्रोटीन दिया जाता है।

**३. वसा :** जिन रोगियों को मूत्र द्वारा प्रोटीन दिया जाता है उनके रक्त में कोलेस्ट्रॉल का स्तर भी बढ़ा हुआ होता है। साथ ही इन रोगियों में ट्राइग्लिसराइड्स का स्तर भी बढ़ा हुआ होता है, जो हृदय धमनी के रोगी को बढ़ावा देता है। अतः इन रोगियों को कोलेस्ट्रॉल और ट्राईग्सिराइड्स कम करने वाली दवाएँ दी जाती हैं।

**४. इलैक्ट्रोलाइट्स एवं द्रव पदार्थ :** चूँकि रोग में मूत्र को सांद्र बनाने की क्षमता कम हो जाती है अतः हानिकारक यूरिया इत्यादि को निकालने के लिए अधिक पानी की जरूरत होती है। कम से कम ३ लीटर पानी रोगी को पीने की सलाह दी जाती है। चिकित्सक की सलाह के अनुसार रोगी को सोडियम या पोटेशियम की मात्रा कम करने की सलाह दी जाती है।

**५. ऑस्टियोडिस्ट्रॉफी :** चिकित्सक इस बीमारी में रक्त द्रव में कैल्शियम और फॉस्फेट की मात्रा सामान्य स्तर पर रखने का प्रयास करते हैं। इसके लिए विटामिन 'डी' जो कृत्रिम रूप में होता है, दिया जाता है। फॉस्फेट का स्तर ठीक रखने के लिए कैल्शियम कार्बोनेट देते हैं।

**रोगी का भविष्य :** नई तकनीकों की वजह से अब इस बीमारी से ग्रस्त रोगियों की आयु बढ़ाना संभव हो गया है। डॉयलेसिस लेने वाले ८० प्रतिशत रोगी ५ वर्ष तक जिंदा रहते हैं। जबकि एम्बुलेटरी पेरीटोनियल डॉयलेसिस लेने वाले ५० प्रतिशत रोगी ५ वर्ष तक जीवित रहते हैं। गुर्दों का प्रत्यारोपण करवाले वाले ८०: रोगी भी ५ वर्ष या अधिक जीवित रह पाते हैं।

**गुर्दों का कृत्रिम विकल्प :** विगत ४० वर्षों से इस तरह की प्रक्रियाएँ रोगी की जीवनावधि बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। कृत्रिम डॉयलेसिस रक्त को छानकर उसमें से यूरिया जैसे नाइट्रोजनयुक्त हानिकारक पदार्थ तो अलग कर देता है, परन्तु हार्मोन का अंतःस्राव एवं अन्य चयापचय के कार्य वह नहीं कर पाता है। अतः कुछ परेशानियाँ फिर भी रोगी को होती रहती हैं। इसके अलावा डॉयलेसिस सुविधा भारत जैसे देश में हर स्थान पर उपलब्ध भी नहीं होती है।

**पेरीटोनियल डॉयलेसिस :** डॉयलेसिस दो तरह का होता है। एक तो शरीर का रक्त शिराओं द्वारा डॉयलेसिस मशीन में ले जाकर उसको छानना। दूसरा पेट की गुहा के द्रव को बारी–बारी से छानना। इस प्रक्रिया को कन्टीन्यूस एम्बूलेटरी पेरीटोनियल डॉयलेसिस कहते हैं। डॉयलेसिस की दोनों प्रक्रियाओं को आवश्यकतानुसार अपनाकर चिकित्सक बेहतर परिणाम प्राप्त करते हैं।

पेरीटोनियल डॉयलेसिस सीधे रक्त के डॉयलेसिस से कम प्रभावी होता है परन्तु यह प्रक्रिया उससे सरल है। इस तरह का डॉयलेसिस हृदय रोगियों के लिए उपयोगी और सुविधाजनक होता है। इसमें स्थायी रूप से एक नलिका पेट

शेष पृष्ठ 11 पर

# श्रीकृष्ण का पवित्र और महान जीवन चरित्र

✍ कृष्ण चन्द्र गर्ग

**श्रीकृष्ण** महाभारत के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पात्र थे। महाभारत का युद्ध द्वापर युग के अन्त में अब से लगभग ५२०० वर्ष पूर्व हुआ हुआ। श्री कृष्ण के जीवन चरित्र का प्रमाणिक स्रोत महाभारत का पुस्तक ही है। महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण का जीवन बड़ा पवित्र और महान था। उन्होंने जन्म से मृत्यु तक कोई भी बुरा काम किया हो ऐसा नहीं लिखा।

महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण की एक पत्नी थी रुक्मिणी। विवाह के बाद श्री कृष्ण ने अपनी पत्नी रुक्मिणी के साथ १२ वर्ष तक हिमालय पर्वत पर रहकर ब्रह्मचर्य का पालन किया। उसके पश्चात उनके यहां एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम प्रद्यम्न रखा गया। प्रद्यम्न बड़ा होकर हू बहू अपने पिता श्री कृष्ण जैसा ही दीखता था। महाभारत में राधा नाम की किसी स्त्री का कोई ज़िकर नहीं है।

राजसूय यज्ञ (महाभारत के युद्ध के पहले की अवस्था है) पाण्डवों के राज्य का तेज सभी जगह पहुँच चुका था। प्रजा सुखी थी। सभी राजे–महाराजे उनका सिक्का मानते थे। तब युधिष्ठिर ने महाराजाधिराज (चक्रवर्ती सम्राट) की उपाधि पाने के लिए

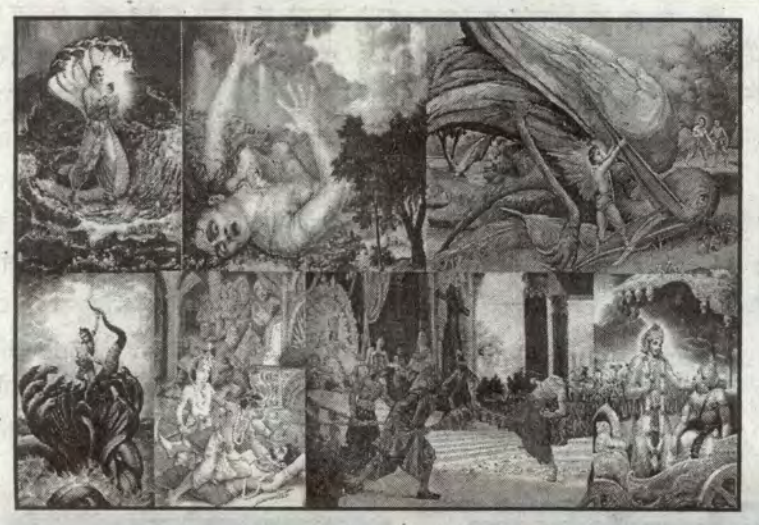

राजसूय यज्ञ की ठानी। इसके सम्बन्ध में उसने अपने मन्त्रियों और भाईयों को बुलाकर पूछा क्या मैं राजसूय यज्ञ कर सकता हूँ? सबने जवाब दिया – हां, अवश्य कर सकते हैं, आप इसके योग्य पात्र हैं। व्यास आदि ऋषियों से यही प्रश्न किया। उन सबने भी हां में ही उत्तर दिया। परन्तु युधिष्ठिर को श्री कृष्ण से सम्मति लिए बिना तसल्ली न हुई। उन्होंने श्री कृष्ण से कहा –हे कृष्ण! कोई तो मित्रता के कारण मेरे दोष नहीं बताता, कोई स्वार्थवश मीठी–मीठी बातें करता है। पृथ्वी पर ऐसे लोग ही अधिक हैं। उनकी सम्मति से कोई काम नहीं किया जा सकता। आप इन दोषों से रहित हैं। इसलिए आप ही मुझे ठीक–ठीक सलाह दें। तब श्री कृष्ण बोले महान पराश्रमी जरासन्ध के जीते ही आपका राजसूय यज्ञ पूरा न होगा। उसको हराने के बाद ही यह महान कार्य सफल हो सकेगा।

**जरासन्ध वध** : जरासन्ध बड़े विशाल और वैभवशाली राज्य मगध का राजा था। वह बड़ा क्रूर और अत्याचारी था। उसने अपने यहां ८६ राजाओं को बन्दी बना रखा था और यह ऐलान कर रखा था कि जब इनकी संख्या १०० हो जाएगी वह इन सबकी बलि चढ़ा देगा। यह अत्याचार श्री कृष्ण को सहन नहीं था। इसी कारण से वे उसे समाप्त करना चाहते थे। जरासन्ध का जन, धन, बल इतना अधिक था कि रणक्षेत्र में उसे हराना असम्भव था। श्री कृष्ण ने नीति से जरासन्ध का भीम से युद्ध करवा दिया जिसमें जरासन्ध मारा गया। तब श्री कृष्ण ने सभी बन्दी राजाओं को मुक्त कर दिया और जरासन्ध के पुत्र सहदेव को मगध का राजा बना दिया।

**प्रथम अर्ध्य (पहला सम्मान)** : राजसूय यज्ञ आरम्भ होने पर भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा कि उपस्थित राजाओं में जो सबसे श्रेष्ठ है उसे ही प्रथम अर्ध्य देना चाहिए। युधिष्ठिर ने भीष्म से ही पूछ लिया कि ऐसा व्यक्ति कौन है जो पहले अर्घ्य पाने का पात्र है। इस पर भीष्म ने कहा – जैसे चमकने वाले सभी तारों में सूर्य सबसे अधिक प्रकाशमान है वैसे ही इन सब राजाओं में श्री कृष्ण तेज, बल, पराक्रम में सबसे अधिक हैं। इसलिए वे ही प्रथम अर्ध्य पाने के योग्य हैं। तब युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर सहदेव ने श्री कृष्ण को प्रथम सर्ध्य दिया।

सन्धि का प्रस्ताव पाण्डवों ने १२ वर्ष वन में बिताने के बाद १३वां वर्ष अज्ञातवास में बिताया। फिर कौरवों से अपना राज्य मांगा। जब कौरवों ने राज्य देने से इनकार कर दिया तब पाण्डवों ने युद्ध का निश्चय कर लिया। अन्तिम कोशिश के तौर पर श्री कृष्ण कौरवों के पास जाने को तैयार हुए। सबने उनको रोका कि कौरव नहीं मानने वाले तो श्रीकृष्ण बोले मैं पुरुषार्थ तो कर सकता हूँ, ईश्वर इच्छा मेरे अधीन नहीं है। इसलिए फल मैं नहीं जानता। मैं इतना जानता हूँ कि मुझे शक्तिभर प्रयास कर लेना चाहिए। हस्तिनापुर पहुँचने पर महात्मा विदुर ने भी कृष्ण से कहा कि दुर्योधन मानने वाला नहीं है। अतः आप सन्धि का प्रयत्न छोड़ दें। तब श्री कृष्ण ने कहा सारी पृथ्वी खून से लथपथ होती देख रहा नहीं जाता। और यह भी कहा आपत्ति में पड़े अपने व्यक्ति को बालों से पकड़कर भी खींचने का यत्न करे फिर मनुष्य निन्दा का पात्र नहीं होता।

श्री कृष्ण ने सन्धि के लिए दुर्योधन, धृतराष्ट्र, कर्ण से बात की, उन्हें समझाने का प्रयास किया। परन्तु सफलता न मिली। इस दौरान दुर्योधन ने उन्हें अपने यहां भोजन करने के लिए कहा। तब श्री कृष्ण बोले–राजन्! किसी के घर का अन्न दो कारणों से खाया जाता है – या तो प्रेम के कारण या आपत्ति पड़ने पर। प्रीति तो तुम में नहीं है और संकट में हम नहीं हैं। यजुदर्वेद कर मन्त्र है–

**यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।**
**तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।।**

इस वेद मन्त्र में बताया गया है कि सुखी और उन्नत जीवन के लिए दो गुणों की आवश्यकता है एक विद्वता और दूसरा बल। श्री कृष्ण में ये दोनों गुण विद्यमान थे। उनकी बुद्धिमता और नीति के कारण ही कम शक्ति के होते हुए श्री महाभारत के युद्ध में पाण्डवों ने कौरवों पर विजय प्राप्त की और शक्तिशाली, अत्याचारी राजा जरासन्ध को मार गिराया। श्री कृष्ण ने शारीरिक बल के सहारे ही अत्याचारी राजा कंस को यमलोक पहुँचा दिया और घमण्डी शिशुपाल का वध कर दिया। गीता में श्री कृष्ण ने योग की परिभाषा ऐसे की है योगः कर्मसु कौशलम्। अर्थात कार्य को कुशलता पूर्वक करना योग है। इस दृष्टि से श्री कृष्ण पूर्ण योगी थे क्योंकि उन्होंने जो भी काम किए उनमें अपनी बुद्धि बल और नीति से सफलता प्राप्त की।

महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन और कर्ण के बीच लड़ाई हो रही थी तब कर्ण के रथ का पहिया पृथ्वी में धंस गया और वह उसे निकालने के लिए रथ से नीचे उतरा। तब कर्ण ने अर्जुन को लड़ाई के धर्म की दुहाई दी और वह चिल्लाया कि निहत्थे पर वार करना धर्म नहीं है। इस पर श्री कृष्ण बोले–अर्र कर्ण! अब धर्म–धर्म चिल्लाता है। परन्तु–

१. जिस समय तुम, दुशासन, शकुनि और सौबल सब मिलकर ऋतुमती द्रौपदी को घसीट लाए थे, उस समय तुम्हें धर्म की याद न आई।

२. जब तुम बहुत से महार्थियों ने मिलकर अकेले अभिमन्यु को घेरकर मार डाला था, उस समय तुम्हारा धर्म कहां गया था।

३. जब १३ वर्ष के बनवास के बाद पाण्डवों ने अपना राज्य मांगा और तुमने नहीं दिया, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।

४. जब तुम्हारी सम्मति से दुर्योधन ने भीम को विष खिलाकर नदी में डाल दिया था, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।

५. जब वारणवत नगर में लाख के घर में तुमने सोते हुए पाण्डवो को जलाने का प्रयत्न किया था, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।

कर्ण को इतना कहकर श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि इस प्रकार दलदल में फंसे कर्ण का वध करना पुण्य है, पाप नहीं। दूसरे ही क्षण कर्ण अर्जुन के वाण से जख्मी होकर गिर गया। यह थी श्री कृष्ण शेष पृष्ठ 10 पर

## मिजोरम की जिला परिषद में भाजपा और कांग्रेस ने मिलाया हाथ

**मिजोरम** में भाजपा चकमा स्वायत्त जिला परिषद (सीएडीसी) पर काबिज होने की तैयारी में है। हालांकि उसे यहां सत्ता कांग्रेस के छह सदस्यों के समर्थन से मिलेगी। मिजोरम के एक वरिष्ठ भाजपा नेता ने बताया कि ऐसा खंडित जनादेश के चलते हो रहा है। कहा था कि पार्टी उन निर्वाचित सीएडीसी सदस्यों पर कार्रवाई करेगी जो कांग्रेस के साथ गठबंधन को थोप रहे हैं। लेकिन बाद में पार्टी नेतृत्व समझौते के लिए सहमत हो गया। चूंकि छह कांग्रेस सदस्यों ने गठबंधन में शामिल होने पर सहमति जता दी।

**प्रतिक्रिया**

१. मिजोरम राज्यं की चकमा स्वायत्त जिला परिषद् में भाजपा को पूर्ण बहुमत नहीं मिला।

२. सत्ता की भूख में भाजपा ने घुर विरोधी कांग्रेस के छह सदस्यों का साथ लेना स्वीकार कर लिया।

३. अब भाजपा सत्तारूढ़ हो जाएगी। केन्द्रीय नेतृत्व ने भी सहमति दे दी है।

४. वीर सावरकर ने १९५१ में ही कह दिया था कि निकट भविष्य में भाजपा/जनसंघ, कांग्रेस जैसी हो जाएगी।

५. १९८० से भाजपा गांधीवादी हो गई है। कांग्रेस पहले से गांधीवादी है फिर दोनों में शत्रुता क्यों?

६. दोनों दल जानते हैं कि मुर्दा हिन्दू कुछ नहीं कहेगा अतः मिलकर सत्ता सुख भोगो।

अतः हिन्दुओं जागो वरना १९४७ से भी ज्यादा मार खानी पड़ेगी।

**आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर**

# राजनैतिक कर्मज्ञों का अभाव

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

**आज** निसंदेह यह कहना अनुचित नही होगा कि विश्व में भारत जैसे विराट देश में लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के होते हुए भी ऐसे राजनैतिक कर्मज्ञों का अभाव प्रतीत होता है जो राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोकर विकास के पथ पर अग्रसर कर सकें? कुशल व सक्षम राजनीतिज्ञों के अभाव के कारण अनेक प्रकार के अल्पकालिक राजनैतिक लाभ दीर्धकाल में विनाशकारी बन जाएं तो उसका उत्तरदायी कौन होगा? देश की सर्वोच्च संस्था संसद में चाहे–अनचाहे गतिरोध बनायें रखकर बार–बार और बात–बात पर विधायी कार्यों में अवरोध उत्पन्न करना राजनेताओं की विरोधी व दूषित मानसिकता से ग्रस्त होने का ही परिचय कराती हैं। परिणामस्वरूप वर्तमान राजनीति समाज में संघर्षो का समाधान करने के स्थान पर अनगिनत संघर्षों को जन्म दे रही हैं। साथ ही ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे राजनेता सत्ता के लिये इतने अधिक आतुर हैं कि देश को विश्व गुरु बनाने के स्थान पर कूटनीति, रणनीति व राजनीति के क्षेत्र में आगे बढ़ा रहें हैं।

आज देश में विभिन्न राजनेता मुख्यतः लोकतंत्र के उच्च मापदंडों को त्याग कर राष्ट्रहित की उपेक्षा करके आम नागरिकों की भावनाओं का दोहन करने में अधिक सक्रिय हो गये हैं। इससे भ्रमित होकर हम ऐसे राजनीतिज्ञों व देशद्रोही षडयंत्रकारियों के झांसे में आकर अप्रत्यक्ष रूप से अज्ञान वश अपने को ही हानि पहुँचा रहें हैं। हम क्यों नही सोचते कि यह समाज, यह नगर, यह प्रदेश और सम्पूर्ण देश हमारा ही तो हैं, फिर हम क्यों ऐसे भ्रम फैलाने वाले सत्ता लोभी नेताओं की असामाजिक व अराष्ट्रीय मानसिकता को नही समझते? हम बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक एवं स्वर्ण व दलित के तथाकथित भेदभरे रिसते हुए घावों को भरने के स्थान पर उसे क्यों हरा होने दें? क्या ऐसे नेताओं के रहते भारत विरोधी शक्तियां हमको खंडित करने के लिये अपने–अपने स्तर से और अधिक सक्रिय नही हो जायेगी? विचार करना होगा कि हमारे देश के नेताओं की सत्ता लोभी राजनीति का परिणाम कितना भयंकर हो सकता हैं? क्यों नही राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिये राजनीति को पवित्र करके एक ऐसी राष्ट्रनीति अपनायी जाती जिससे सभी वर्गो व पंथों को समान अधिकार मिलें और देश सुदृढ़ हो सकें? क्या हम कभी देश की राजनीति में निरंतर हो रही गिरावट पर चर्चा करके राष्ट्रहित में इसको पावन करने के लिये कोई मार्ग ढूंढने का प्रयास करेंगे?

वस्तुतः राजनीति तो राष्ट्रनीति निश्चित करके सम्पूर्ण समाज के हितों के लिये कार्य करते हुए राष्ट्र को विकास के मार्ग पर ले जाने के लिये प्रतिबद्ध होती हैं। जबकि आज आधुनिक भोगवादी युग की चकाचौंध से आकर्षित होकर उसे पाने की अभिलाषा में विभिन्न राजनैतिक दलों के सामान्य कार्यकर्ताओं में नेता बनने की होड़ लगी हुई हैं। आज राजनीति को आत्मस्तुति व आनंददायी जीवन शैली व्यतीत करने का माध्यम बनाया जा रहा हैं। जिस कारण राजसत्ता के प्रति मोह बढ़ने से विभिन्न नेताओं में तीव्र प्रतिद्वंदिता छिड़ी हुई हैं। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियां होने से देश के उज्ज्वल भविष्य के लिये किसी भी प्रकार के चिंतन व त्याग का पूर्णतः अभाव बना हुआ हैं। परिणाम स्वरूप देशभक्ति या राष्ट्रप्रेम की अनभिज्ञता से अधिकांश युवा पीढी को सरलता से भ्रमित करके उनको असामाजिक, अराष्ट्रीय व देशद्रोही आंदोलनों में झोंकना भी सरल हो गया हैं। अभी पिछले दिनों (२ अप्रैल २०१८) देश के विभिन्न भागों में एससी/एसटी एक्ट (अनुसूचित जाति–जनजाति अत्याचार निरोधक अधिनियम १९८९) में सुधार से संबंधित उच्चतम न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध जो उपद्रव हुए वे अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण थे। यह कोई आंदोलन नही बल्कि षडयंत्रकारियों द्वारा सुनियोजित अराजकता का निंदनीय प्रदर्शन था। अतः भविष्य में ऐसी स्थिति पुनः न उभरे और सभी षडयंत्रकारियों की भारत विरोधी योजनाऐ विफल हो, इसके लिये हम सबकी यह प्राथमिकता होनी चाहिये कि राष्ट्रहित में हर संभव प्रयास करके राष्ट्र की एकता व अखंडता पर कोई संकट न आने दें। संभवतः ऐसे प्रयासों से हम देश के विभिन्न राजनैतिक दलों को भी राष्ट्रहित की राजनीति करने के लिये प्रेरित कर सकेंगे। वर्तमान परिप्रेक्ष में यह विचार करना भी आवश्यक है कि जब तक अल्पसंख्यकवाद व तथा कथित दलितों को विशेषाधिकार देनें के लिये राजकोष और सरकारी सुविधायें लुटायी जाती रहेगी तब तक सबका साथ व सबका विकास कैसे संभव हो सकेगा? भारतीय संविधान में तथाकथित दलित हिंदुओं को आरक्षण देने की सीमित अवधि के लिये व्यवस्था की गयी थी परंतु यह आरक्षण अभी भी यथावत जारी है। इसके अतिरिक्त एससी/एसटी एक्ट के द्वारा उनको एक ऐसा वैधानिक विशेषाधिकार देना कि वे अन्य वर्ग के निर्दोषित होने पर भी उनको झूठा आरोपित करने का अनुचित व अमानवीय कार्य करके सरलता से उनको प्रताड़ित कर सकें, कहाँ तक उचित है? धार्मिक आधार पर देशवासियों को बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक में वर्गीकरण करके केवल एक वर्ग को अतिरिक्त अधिकार देना क्या साम्प्रदायिक्त सौहार्द व धर्मनिरपेक्षता पर आघात नही है? हमारे नीतिनियन्ता ऐसी धार्मिक व जातीय राजनीति के चलते सम्पूर्ण समाज को समग्र दृष्टि से न देख कर वर्तमान के लिये भविष्य को भी संकट में क्यों डाल रहें हैं? क्या इन परिस्थितियों में सबका साथ संभव हो सकता हैं? सम्पूर्ण समाज में परस्पर भेदभाव व वैमनस्य बढ़ाने वाली और वर्ग विशेष को लुभाने वाली नीतियां क्या राष्ट्रीय परिप्रेक्ष में कोई सकारात्मक संदेश का संचार कर पायेगी? मानवीय आधार पर यह नीतियां न्यायसंगत कैसे हो सकती है? क्या वर्ग विशेषों के अतिरिक्त देश पर किसी और समाज का आधिपत्य नही हैं? क्या सामान्य वर्गो के मौलिक अधिकारों में विभिन्न प्रकार के वैधानिक व राजनैतिक प्रावधानों के हस्तक्षेप होने से उनका प्रत्यक्ष उत्पीडन नही हो रहा हैं? समाज को विभाजित करने वाली ऐसी व्यवस्था से प्रगतिशील समाज व मानवाधिकार कब तक मौन रहेगा? जब न्याय सम्पूर्ण समाज के लिए बराबर का अधिकार प्रदत्त करता है तो किसी एक को अधिक और दूसरे को कम देने का भेदभाव नही करता। न्याय तो जीवन के मौलिक अधिकारों की रक्षा का सरंक्षण करके उसको उन्नति की ओर ले जाने के लिए होता हैं। जब यह माना जाता है कि न्याय एक स्वतंत्र तत्व होने के कारण दोषपूर्ण कानूनों का दास नही हैं, तो फिर

शेष पृष्ठ 11 पर

अमर उजाला, नई दिल्ली (बुधवार, २ मई २०१८)

## भाईचारे की मस्जिद को 'अमन' नाम दें

### पाकिस्तान बच्ची ने लिखा भारत में पंजाब में लोगों के नाम खत

भारत में पंजाब के सूम गांव में हिंदुओं की ओर से दी गई जमीन और सिखों के आर्थिक सहयोग से गांव के गरीब मुसलमानों के लिए एक मस्जिद बनाई गई है। **क्या कहने उदारता के?**

- हिन्दू शुरू से ही अति उदार और रहम दिल रहा है। अधिकता हर चीज की हानिकारक होती है। आश्चर्य है कि समाज बदलने को तैयार नहीं है। पिछली गलतियों को दोहराने में लगा हुआ है।
- पहले पंजाब में सिखों ने ५०० मस्जिदें अपने पैसों से बनवाकर गांवों में दीं।
- अब एक और मस्जिद हिन्दुओं और सिखों ने मिल कर बनवाकर दी है।
- अब सिख भी उदारवादी हो गए हैं जबकि इनकी स्थापना हिन्दुओं की रक्षा के लिए की गई थी।
- पाकिस्तान में शमशान भूमियों पर उग्रवादियों ने अवैध कब्जे कर लिए हैं।
- हिन्दुओं–सिखों से कह देते हैं कि दाह संस्कार अपने अपने घरों में, या सड़कों के किनारे, कर लिया करो अन्यथा शवों को, गाढ़ दिया करो।
- मस्जिदें बनाकर देने वालों से, आग्रह कि वे पाकिस्तान के शमशान स्थलों को, अवैध कब्जों से मुक्त कराने के लिए , हर स्तर पर, आवश्यक कार्रवाई करें ताकि वहां के हिन्दू–सिख, अपने मृतकों का दाह संस्कार, अपनी परम्परा से कर सकें।

**इन्द्रदेव गुलटी, बुलन्दशहर**

# लवजिहाद, धर्मान्तरण, निकाह (धोखेबाजी से किये जा रहे इस्लामीकरण) पर तत्काल प्रतिबन्ध की आवश्यकता

**विगत हजार-बारह** सौ वर्षो से राष्ट्र के रूप में भारत की सबसे बड़ी समस्या धर्मान्तरण है। विश्व सृष्टा की सर्वाधिक रमणीय सृष्टि के रूप में विद्यमान इस महान राष्ट्र की निरन्तर, निःसंकोच निर्मम और निरतिशय रूप से जितनी ज्यादा क्षति धर्मान्तरण की अधमाधम प्रक्रिया के द्वारा हुई है, उतनी अन्य किसी प्रकार से कदापि नहीं भूख, गरीबी, अशिक्षा और भीषण रोगों के आक्रमण भी उतने घातक सिद्ध नहीं हुए, जितने प्रबल घातक धर्मान्तरण के कार्यक्रम रहे। यह पूर्णतया अभारतीय और अहिन्दू अवधारणा है। हिन्दू शास्त्रों में कहीं भी धर्मान्तरण का विधान नहीं है। भारत में यह इस्लाम और ईसाई इत्यादि सेमेटिक मजहबों के साथ ही आयी। भगवद्गीता–समृश विश्वभर में प्रशंसित और अनुक्रियमाण महान् शास्त्र–ग्रन्थ ने स्पष्ट रूप से घोषित किया कि अपने धर्म में रहकर मृत्यु भी अच्छी है लेकिन दूसरे के धर्म को कथापपि स्वीकार नहीं कना चाहिए–स्वधर्मो निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः। भारत में जब पहली–पहली बार इस्लाम और ईसाई मजहबों के अनुयायी आये, तो उन्होंनेनमाज (ईश्वर की प्रार्थना), रोजा (उपवास) और जकात (दान) को ही अपने मजहब के मूल कार्यक्रमों के रूप में घोषित किया। अतः तत्कालीन भारतीय शासकों को इसमें विशेष आपति करने लायक बिन्दु नहीं दिखे। उन्होंने यही कहकर उन्हें भारत में रहने की अनुमति दी कि ठीक है, इस प्रकार ईश्वर–प्रार्थना में कोई बुराई नहीं। लेकिन जल्दी ही उस अनुग्रहपूर्ण अनुमति को किनारे कर सन्दर्भित सेमेटिक मजहबों के प्रतिनिधि आगन्तुकों ने धर्मान्तरण के माध्यम से भारतीय समाज की समस्सता, सौहार्द, एकता और सामजस्य को तहस–नहस करना प्रारम्भ कर दिया। धर्मान्तरण में लगे तत्कालीन मुल्ला–मौलाना यह जानते थे कि दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सुसम्पत्र भारतीय समाज को वे मात्र अपनी बातों और तकों से तनिक भी प्रभावित नहीं कर सकते, इसलिए उन्होने अपने हममजहबी विदेशी हमलावरों को भारत पर आक्रमण करने का आमन्त्रण भेजा। इन हमलावरों ने तत्कालीन समाज की कुछ दुर्बलताओं के कारण और आक्रमणों में प्राप्त सफलता से उत्साहित होकर तलवार के बल पर जोर–जबर्दस्ती से धर्मान्तरण के अभियान को तेजी से चलाया। भारत के शासक बनकर इनमें से ज्यादातर ने हिन्दुओं के मन्दिर और मूर्तियाँ तोड़ी उन पर जजिया जैसे कर लगाये, स्वधर्मप्राण लाखों हिन्दुओं का बलपूर्वक धर्मान्तरण किया और इसमें असफल रहने पर उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

दाराशिकोह और रहीम जैसे कुछ सामान्यतः उदार एवं हिन्दुत्व को समझने का प्रयास करने वाले मुस्लिमों को छोड़ दिया जाये, तो अधिकतम मुस्लिम शासकों ने छल, बल, धूर्तता, लोभ और लालच के माध्यम से हिन्दुओं के धर्मान्तरण में खुलकर भागीदारी निभायी। औरंगजेब और टीपू तो इस सन्दर्भ में कुख्यात है ही; लेकिन उदारता का नकाब ओढ़कर सद्भावना का नाटक करनेवाले दूसरे मुस्लिम शासक भी इस काम में पीछे न रहकर 'बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभान अल्लाह' की कहावत चरितार्थ करते रहे। धर्मान्तरण के इस कुत्सित अभियान में शाक–सब्जी काटने के लिए भी पड़ोसी से चाकू माँगनेवाला सामान्य हिन्दू समाज तो अपनी सहिष्णुता, सहअस्तित्व और अहिंसा भाव के कारण आये दिन आततायियों का आखेट होता रहा लेकिन सिक्ख गुरु तेगबहादुर और गुरुगोबिन्दसिंह जी महाराज–जैसे महान् व्यक्तियों ने जहाँ इसका सशस्त्र प्रतिकार किया, वही बार–बार उन्होंने अपना और अपने पुत्रों के विलक्षण बलिदान भी दिये। प्रबुद्ध वर्ग में शास्त्रीय स्तर पर उस समय देवलरमृति के रूप में धर्मान्तरियों की स्वधर्म में पुनर्वापसी के लिए विशिष्ट चिन्तन का उपक्रम दिखलायी देता है, जिसमें कष्टसाध्य बड़े प्रायश्वितों का विधान न करके मात्र पञ्चगव्य के स्पर्श अथवा सेवन से ही स्वधर्म में वापसी का मार्ग प्रशस्त किया गया, लेकिन धर्मान्तरण का क्रम तब भी नहीं रुका। १६वीं शती के उत्तरार्द्ध में महर्षि दयानन्द भी इससे बेहद चिन्तित थे। उन्होंने भी धर्मान्तरित हिन्दुओं की स्वधर्म में पुनर्यापसी के लिए शुद्धि का सरल विधान

प्रस्तुत किया।

धर्मान्तरण की हैजा और प्लेग सरीखी संक्रामक महाव्याधि को फैलाने में ईसाई मिशनरी भी पीछे नहीं रहे। अंग्रेजी शासन–काल में नौकरी और छोकरी' के माध्यम से हिन्दुओं को ईसाई बनाने के निरन्तर प्रयत्न हुए। जो इन प्रलोभनों से ईसाई नहीं करे, उनको धर्मान्तरित करने के लिए इनके द्वारा छल–प्रपंच का सहारा लिया गया। रात के आँधेरे में, गाँवों के एकमात्र कुएँ में एक डबलरोटी के टुकड़े को डालकर पूरे गाँव के ईसाईकरण के असंख्य प्रयत्न किये गये। चर्च को गिरजाघर और मेरी या मरियम को मीरा के रूप में प्रचारित किया गया। 'यजुर्वेद' कहा गया। परित्यक्त अनाथ बच्चों को पालने में भी ईसाई पादरियों का धर्मान्तरण का उद्देश्य ही निहित रहा है। आज भी ईसाई मिशनरी भारत के उन्हीं क्षेत्रों में धर्म–प्रचार के आवरण में धर्मान्तरण कार्यक्रम अबाधगति से चलाते हैं, जहाँ अशिक्षा और अभाव हैं। पढ़े–लिखे लोगों में तो इनकी दाल कम गलती है लेकिन दलित, वनवासियों और जनजातियों के समुदायों को ये ईसा की भेडे' बनाने में कमी पीछे नहीं रहते। इनकी तथाकथित 'सेवा–भावना मात्र ऊपरी खोल है। उसके कंचुक में धर्मान्तरण के प्रयत्न ही मूलतः सन्निहित रहते हैं। ये धर्मान्तरण व्यक्ति के धर्म परिवर्तन तक सीमित नहीं रहते। इनका एक उद्देश्य उस क्षेत्र से राष्ट्रीय भावना को समाप्त करना भी मुस्लिमों और ईसाइयों, दोनों के ही द्वारा किये गये घनघोर धर्मान्तरण का दुष्फल भोग रहा है।

धर्मान्तरण यदि केवल उपासना–पद्धति के परिवर्तन तक सीमित रहता, तो विशेष चिन्ता की बात नहीं थी. क्योंकि भारत में तो बहुत प्राचीन काल से ही स्वरुचि के अनुसार उपास्य देव और उसकी विशिष्ट उपासना–प्रणाली अपनाने की स्वतन्त्रता रही है, जैसा कि 'शिवमहिम्नस्तोत्र' में अत्यन्त स्पष्ट कथन उपलब्ध है– 'रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव' (यथारुचि अपनायी गयी सभी उपासना–पद्धतियाँ उपासक को उसी प्रकार परमात्म–प्राप्ति करा देती हैं, जैसे सारी नदियाँ अन्ततः समुद्र में जाकर मिल जाती हैं।) स्वामी विवेकानन्द के द्वारा शिकागो के धर्म सम्मेलन में प्रथम दिवस प्रदत्त व्याख्यान का विषय ही यही था। शैव, वैष्णव, शाक्त, गाणपत्य, जैन, बौद्ध और सिक्ख प्रभूति विभित्र उपासना–पद्धतियों का विकास इसी प्रकार हुआ, और वे राष्ट्र की एकता और सामाजिक समरसता के लिए पोषक ही सिद्ध हुई। इसी कारण एक ही परिवार में कभी–कभी अनेक देवों के भक्त एक साथ प्रेमपूर्वक रहते देखे जा सकते हैं। इसके विपरीत इस्लाम और ईसाई मतों के माननेवालों के द्वारा किया धर्मान्तरण राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता के लिए घातक, भारतीय भाषाओं के अपमान तथा परम्परागत पर्वो और उत्सवों तथा भारत के मान्य महापुरुषों के तिरस्कार का मूल कारण सिद्ध होता रहा है। इस कारण इस विदेशी धर्मान्तरण–प्रक्रिया को तत्काल प्रतिबन्धित करने का निर्णय लेने में अब अधिक विलम्ब नहीं होना चाहिए। यह साम्प्रदायिक सद्भाव के स्थान पर विघटन और विद्वेष का ही कारक है, जिसकी अनुमति भारतीय संविधान में किसी को नहीं दी गयी है। अल्पसंख्यकों को भी जो धार्मिक अधिकार दिये गये है, उनका प्रयोजन भारत का विखण्डन या बहुसंख्यकों का उत्पीड़न करना नहीं हो सकता है।

गत कुछ वर्षो से लवजिहाद के माध्यम से किया जा रहा हिन्दुओं का धर्मान्तरण तेजी से इस्लामीकरण की ओर अग्रसर होने के कारण भारतीय समाज, विशेष रूप से हिन्दुओं के लिस सर्वाधिक खतरनाक हो गया है। लव जिहाद पर जो भी चर्चाएँ हुई हैं, वे हिन्दू समाज की आशंकाओं को बढ़ानेवाली ही हैं। भारत के अनेक प्रदेशों से जो समाचार आ रहे हैं, तदनुसार इस्लामीकरण के अलंबरदार मुस्लिम युवकों को हिन्दू लड़कियों को पटाने और उनका धर्मान्तरण कर उनसे निकाह करने के लिए बड़ी मात्रा में धन दे रहे हैं। ये युवक पहले हिन्दू नामों से भोली–भाली हिन्दू युवतियों को आकर्षित करते हैं, फिर उनसे शारीरिक सम्बन्ध बनाते हुए उसके अश्लील फोटो लेकर उसे प्रचारित करने की धमकी देते हुए अपने वास्तविक नाम को प्रकट कर इस्लाम की तथाकथित अच्छाइयों की चर्चा करते हैं। उसे बड़े मुल्ला–मौलवियों से मिलवाते हैं। ब्लैकमेल और बदनामी के भय से ये लड़कियाँ उनसे शादी करने के लिए जैसे–तैसे तैयार हो जाती हैं। इसी क्रम में निकाह से पहले उनका धर्मान्तरण और नाम–परिवर्तन कर दिया जाता है। ये भोली–भाली हिन्दू युवतियाँ इस प्रक्रिया में इतनी आतंकित कर दी जाती हैं कि वे अपने माता–पिता

शेष पृष्ठ 10 पर

# स्तरहीन कवि सम्मेलनों से हो रहा हिन्दी की गरिमा पर आघात

✍ डॉ० अर्पण जैन

**कवि** सम्मेलनों का समृद्धशाली इतिहास लगभग सन १६२० माना जाता हैं। वो भी जन सामान्य को काव्य गरिमा के आलोक से जोड़ कर देशप्रेम प्रस्तावित करना। चूँकि उस दौर में भारत में जन समूह के एकत्रीकरण के लिए बहाने काम ही हुआ करते थे, जिसमें लोग सहजता से आएं और वहां क्रांति का स्वर फूंका जा सके। उसके बाद कवि सम्मेलन भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग बन गए। उस मुद्दे के बाद कवि सम्मेलनों में नौं रसों को शामिल करने की

कवायद शुरू हुई। भारत में स्वाधीनता के बाद से ८० के दशक के आरम्भिक दिनों तक कवि सम्मेलनों का 'स्वर्णिम काल' कहा जा सकता है। ८० के दशक के उत्तरार्ध से ९० के दशक के अंत तक भारत का युवा बेरोज़गारी जैसी कई समस्याओं में उलझा रहा। इसका प्रभाव कवि–सम्मेलनों पर भी हुआ और भारत का युवा वर्ग इस कला से दूर होता गया। मनोरंजन के नए उपकरण जैसे टेलीविज़न और बाद में इंटरनेट ने सर्कस, जादू के शो और नाटक की ही तरह कवि सम्मेलनों पर भी भारी प्रभाव डाला। कवि सम्मेलन संख्या और गुणवत्ता, दोनों ही दृष्टि से कमज़ोर होते चले गए। श्रोताओं की संख्या में भी भारी गिरावट आई। इसका मुख्य कारण यह था कि विभिन्न समस्याओं से घिरे युवा दोबारा कवि–सम्मेलन की ओर नहीं लौटे। साथ ही उन दिनों भीड़ में जमने वाले उत्कृष्ट कवियों की कमी थी। लेकिन न सहस्त्राब्दी के आरम्भ होते ही इंटरनेटयुगिन युवा पीढ़ी, जो कि अपना अधिकांश समय इंटरनेट पर गुज़ार देती हैं वह कवि सम्मेलन को पसन्द करने लगी। इसी युग में काव्य को कई कवियों ने सहजता और सरलता से आम जनमानस की भाषा में लिखकर काव्य किताबों से निकल कर मंचो पर सजने लगा।

२००४ से लेकर २०१० तक का काल हिन्दी कवि सम्मेलन का दूसरा स्वर्णिम काल भी कहा जा सकता है। श्रोताओं की तेज़ी से बढती हुई संख्या, गुणवत्ता वाले कवियों का आगमन और सबसे बढ़के, युवाओं का इस कला से वापस जुड़ना इस बात की पुष्टि करता है। पारम्परिक रूप से कवि सम्मेलन सामाजिक कार्यक्रमों, सरकारी कार्यक्रमों, निजी कार्यक्रमों और गिने चुने कार्पोरेट उत्सवों तक सीमित थे। लेकिन इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ में शैक्षिक संस्थाओं में इसकी बढती संख्या प्रभावित करने वाली है। जिन शैक्षिक संस्थाओं में कवि–सम्मेलन होते हैं, उनमें आई आई टी (आई आई एम, एन आई टी, विश्व विद्यालय, इंजीनियरिंग, मेडिकल, प्रबंधन और अन्य संस्थान शामिल हैं। उपरोक्त सूचनाएं इस बात की तरफ़ इशारा करती है, कि कवि सम्मेलनों का रूप बदल रहा, परन्तु इसी दौर में साहित्यिक शुचिता का वो हश्र भी हुआ की भारत की संस्कृति में एक हवा बाजारवादी और विज्ञापनवादी संस्कृति की भी घुस गई जिसने स्ट्रीक को भोग्य समझा और उसी के साथ चुहल करने को साहित्य का नाम देकर काव्य से परिवारों को तोड़ दिया। इसी दौर में डॉ० उर्मिलेश ने लिखा है:–

**तुम अगर कवि हो तो मेरा ये निवेदन सुन लो,**
**खोल कर कान जरा वक्त की धड़कन सुन लो,**
**तुम और न ये श्रृंगार लिखो गीतों में**
**तुम न अब प्यार या श्रृंगार लिखो गीतों में**
**वक्त की मांग हैं अंगार लिखों गीतों में**

**सिर्फ कुंठाओं की अभिव्यक्ति नहीं है कविता**
**काम क्रीड़ाओं की आसक्ति नहीं है कविता**
**कविता हर देश की तस्वीर हुआ करती हैं**
**निहत्थे लोगो की शमशीर हुआ करती हैं...**
**तुम भी शमशीर या तलवार लिखों गीतों में**
**वक्त की मांग हैं अंगार लिखों गीतों में**

इसी कविता में डॉ० उर्मिलेश कहते हैं कि जवानी को नपुंसक न बनाओं कवियों.. आखिर क्यों आवश्यकता आन पड़ी इस पंक्तियों को लिखने की? जरूर मंचों से वाग्देवी की पुत्रियों द्वारा पड़े श्रृंगार पर छींटाकशी ने उनके भी हृदय को विदारित किया ही होगा, इसीलिए उन्होंने श्रृंगार विहीन मंच की बात कही होगी, क्योंकि डॉ० उर्मिलेश कमजर्फ तो नहीं थे, बल्कि उस दौर के नायक रहें हैं। पहले उसके बोलो पर ग़ज़लों की बहर कही जा सकती थी, अब उन्ही बोलों की इशारा माना जाने लगा है और न जाने क्यों सीमाएं लांघी जाने लगी है। कवि सम्मेलनों के स्तरहीन होने पर अब सूरज को भी युगधर्म सीखने का समय है। कवि कुमार विश्वास की कविता की पंक्तियाँ यही कहती है कि–

**तम शाश्वत है, रात अमर है,**
**गिरवी पड़े उजाले बोले,**
**सूरज को युगधर्म सिखाते,**
**अंधियारों के पाले बोले**
**चीर-हरण पर मौन साधते,प्रखर मुखों के ताले बोले**
**बधिरों के हित रचें युग ऋचा, वाणी के रखवाले बोले**

नितांत आवश्यक प्रश्न हैं कि वर्तमान में कवि सम्मेलनों के स्तरहीन होने पर वाणी के रखवाले क्यों खामोश है? और सबसे पहले तो ये हो क्यों रहा हैं? उपभोक्तावादी कवि सम्मेलनों में लगातार आयोजक और संयोजक मिलकर कविता को धन पशुओं की रखैल बनाने पर आमद हो रहे हैं। वर्तमान में हिन्दी कवि सम्मेलनों में स्तरहीनता होने के पीछे कवि, संयोजक और आयोजको के साथ–साथ हिन्दी के पाठक और श्रोता भी जिम्मेदार हैं। क्योंकि आप ही यदि विरोध नहीं करेंगे तो प्रतिध्वनियों के कोलाहल पर ध्वनियों का मौन हो जाना ही स्वीकृति देने सामान हैं। यहाँ चुप्पी, चीखों का हल नहीं हैं। स्त्री को भोग्या मानना और उसका उपहास उड़ाने के बाद भी द्विअर्थी संवादों के बहाने सम्पूर्ण नारी जाती को कटघरे में खड़ा करने में जिम्मेदार कुछ एक कवियत्रियाँ भी हैं जो सस्ती लोकप्रिय और ज्यादा काम पाने की लालसा में सरस्वती के मंच को वैश्यालय बनाने से बाज नहीं आ रही हैं।

हिन्दी भाषा के रचनाकार इतने अभागे नहीं है कि अपने घर की बहन–बेटियों को आयोजकों और संयोजकों को परोसकर अपना घर चलाए, फिर क्यों वे आशा करते है भारत की बेटियों से कि वो स्वयं को परोसे और फिर कवि सम्मलेन से रोजगार और प्रसिद्धि पाएं। मंचों पर शब्दबाणों से कविता के साथ–साथ स्त्री का भी चीर–हरण होता हैं, और सभा में बैठे धृतराष्ट्र मुँह फाड़ –फाड़ कर ठिठोली करते हुए असंख्य दुःशासनों के हौसलों को बढ़ा रहें हैं, इस तरह से तो हिन्दी कवि सम्मेलनों और मुजरों में फर्क ही कहा रह जाएगा।

**पंथ होने दो अपरिचित प्राण**
**रहने दो अकेला**
**घेर ले छाया अमा बन**
**आज कंजल-अश्रुओं में**
**रिमझिमा ले यह घिरा घन**

निश्चित तौर पर आ० महादेवी वर्मा जी की कविता की प्रथम पंक्ति में ही समाधान के संग्रह को समाहित कर लिया गया है, इस समस्या का सीधा–सा समाधान हैं, या तो ऐसे कवि सम्मेलनों का बहिष्कार हो जहाँ द्विअर्थी संवादों के सहारे कविता के नाम पर फुहड़ता परोसी जा रही हो, या फिर उसी मंच पर फूहड़ या अभद्र होने वाले दुस्शासन को तमाचा रसीद किया जाए, क्योंकि आपके भी घर में माँ–बेटी होती है और यदि कोई कवियत्री फुहड़ता परोसने में सहभागी बन रही हो तो हाथ–पकड़ कर मंच से उतारा जाए, क्योंकि मंच सरस्वती का मंदिर है, नगरवधुओं का घर नहीं। यदि देश के १० कवि सम्मेलनों में भी ऐसा हो गया तो निश्चित तौर पर अन्य दलालों को शिक्षा मिल जाएगी। हिन्दी के श्रोताओं को जागना होगा यदि हम न जागे तो हिन्दी के मंचों से ही हिन्दी की दुर्दशा का स्वर्णिम अध्याय लिखा जाएगा।

## कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति

**महोदय**

**प्रणाम**

प्रेषित सप्ताहिक **''हिन्दू सभावार्ता''** समाचार पत्र दिनाकं २३ मई से २९ मई २०१८ तक वाली प्राप्त है। पत्रिका का मुखपृष्ठ ही पूरे समाचार से अवगत कराने लगता है। ईष्या और द्वेष से मुक्ति ही भक्ति, घुसपैठियों को बाहर करे सरकार, भ्रूण हत्या एक प्रश्न चिन्ह, स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी से प्रकाशित पत्रिका काफी प्रयोजनशील है। आप लोगों के परिश्रम के लिए मेरा साधुवाद।

**भवदीया**
**बी..एस. शांताबाई**
**प्रधान सचिव**

# संस्कृत मात्र अतीत की धरोहर ही नहीं, आज की अपरिहार्यता है

✍ प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय

**प्रतिवर्ष** संस्कृत–दिवस या कहीं–कहीं संस्कृत–सप्ताह का आयोजन एक कर्मकाण्ड की तरह होता है। विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित राजनेता या अन्य प्रतिष्ठित जन संस्कृत के अनुरागियों को प्रसन्न करने के लिए देववाणी का गुणगान भी उन्मुक्त रूप से करते है। संस्कृत के अध्यापक स्वयं भी संस्कृत के महत्व पर लिखे अपने कुछ श्लोक सुना देते हैं। ताली–वादन के साथ ये कार्यक्रम सम्पन्न हो जाते है, कि शायद ही कभी इन कार्यक्रमों में संस्कृत का प्रसार जनसामान्य तक कैसे किया जाएं इस पर कभी गम्भीरता से विचार होता है। कुछ गैरसरकारी संस्थाएं संस्कृत सिखाने के लिए आठ–दस दिन के कार्यक्रम भी चलाती है। इन कार्यक्रमों में निश्चित रूप से बोलचाल के कुछ संस्कृत–वाक्यों का अभ्यास हो जाता है, जो अच्छी बात है। संस्कृत–भारती इस दृष्टि से उल्लेखनीय कार्य करती रही है। संस्कृत के पठन–पाठन की सामान्यतः दो पद्धतियां है। पहली और सबसे पुरानी है प्राच्य पद्धति, जिसकी पाठशालाओं में प्रथमा, माध्यमा, मध्यमा शास्त्री और आचार्य की कक्षाएं चलती हैं। ये किसी संस्कृत बोर्ड या संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध होती है। इनके विषय में समाज में सामान्यतः दो धारणांए हैं– इनमें छात्रों का बहुधा अभाव होता है, क्योंकि इनमं वही छात्र जाते हैं, जो मुख्य शिक्षा–क्रम से अर्थाभाववश वंचित रह जाते हैं। अयोध्या–काशी में तो कुछ पाठशालाएं चलती भी है, लेकिन अन्यत्र वे प्रायः बन्य होती जा रही हैं। उदाहरण के लिए लखनऊ मं पहले ५–६ पाठशालाएँ थीं, अब केवल एक है। अन्य पाठशालाओं में स्कूल तो अंग्रेजी के चल रहे हैं, नाम मात्र संस्कृत पाठशाला का है। उदाहरण के लिए लखनऊ सदर में संस्कृत पाठशाला इण्टर कालेज या बाबूगंज का दुर्गागीता विद्यालय है। पहले यह संस्कृत विद्यालय था, अब इण्टर कालेज है। संस्कृत विश्वविद्यालयों की भी न्यूनाधिक यही स्थिति है। जहाँ शिक्षा शास्त्री (बी.एड्) है, वहाँ तो छात्र रहते हैं, अन्य शास्त्रों में उनकी स्वल्प संख्या ही होती है। पाठशालाओं से निकले छात्रों में पौरोहित्य या अध्यापन के आगे सोच प्रायः नहीं होती। प्रशासनिक या बैंक इत्यादि की सेवाओं में अपवाद रूप से ही इनका रूझान होता है। यद्यपि पाठशालीय पाठ्यक्रम में आधुनिक विषयों का समावेश तो है, लेकिन उन पर जोर नहीं दिया जाता है।

संस्कृत के पठन–पाठन की दूसरी पद्धति मुख्य शिक्षा–क्रम के साथ जुड़कर है। उत्तर प्रदेश के मुख्य शिक्षा–क्रम की संरचना में, पहले डॉ. सम्पूर्णानन्द और आचार्य नरेन्द्रदेव की महत्वपूर्ण भूमिका थी। 'शत्रौरपि गुणा वाच्याः' ;विरोधी के भी गुणों का कथन करना चाहिए), इस परम्परा के आधार पर कहा जा सकता है कि कांग्रेसी ओर समाजवादी होने पर भी ये श्रेष्ठ शिक्षाविद् होन के साथ संस्कृत में निहित ज्ञान–विज्ञान का महत्व अच्छी तरह समझते थे। इनके द्वारा बनोय गये पाठ्यक्रम में, संस्कृत एक विषय के रूप में आठवीं कक्षा तक सभी छात्रों के लिए अनिवार्य थी। साथ ही आगे की कक्षाओ में हिन्दी के साथ उसके अनिवार्यतया समावेश था। इस कारण कलावर्ग के साथ विज्ञान और वाणिज्य के छात्र भी संस्कृत के साथ आंशिक रूप में जुड़े रहते थे। इण्टर के बाद आयुर्वेद के महाविद्यालयों में प्रदेशार्थियो के साथ संस्कृत विषय की भी अनिवार्यता थी, जिसे संस्कृत–विरोधियों ने समाप्त करा दिया। आयुर्वेद के पाठ्यक्रम में बिना संस्कृत–ज्ञान के ही प्रवेश होने लगा। उसके बाद हिन्दी के साथ जुड़ी संस्कृत पर उनका प्रहार हुआ। हिन्दी का वह तृतीय प्रश्नपत्र ही हटा दिया गया, जिसमें अनिवार्य संस्कृत के प्रश्न होते थे। छठी कक्षा से आठवीं कक्षा तक जो संस्कृत विषय उ.प्र. में अनिवार्य था, उसे समाप्त करने के लिए दिल्ली में डटे वामपंथियों के अनुरोध पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उ.प्र. के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व. बाबू चन्द्रभानु गुप्त को इस आशय का पत्र लिखा कि तीसरी भाषा के रूप में माध्यमिक स्तर पर या तो उर्दू पढ़ायी जाये या कोई दक्षिण भारतीय भाषा। चन्द्रभानु गुप्त जी जानते थे कि दक्षिण भारतीय भाषा का न तो अध्यानक मिलेगा और न छात्र ही होंगे और उर्दू संस्कृत के समकक्ष हो नहीं सकती, इसलिए उन्होंने दृढतापूर्वक नेहरू जी को लिखे पत्र में यह अभिमत व्यक्त किया कि संस्कृत उ.प्र. में बहुंत लोकप्रिय है, इसलिए उसे कदापि नहीं हटाया जा सकता है। बाद में भी संस्कृत हटाने के लिए केन्द्र से अनुस्मारक पर अनुस्मारक आये, लेकिन गुप्त जी चट्टान की तरह अपने निर्णय पर अडिग रहे। स्व. गुप्त जी अपने इस निर्णय के लिए सदैव प्रशंसनीय रहेंगे, भले ही अन्य दृष्टियों से उनकी आलोचना होती रही हो। इसके एक–डेढ दशक बाद संस्कृत–विरोधी संस्कृत हटाने के अपने मन्सूबे में सफल हो ही गये। उत्तर प्रदेश ही नहीं, केन्द्र में भी संस्कृत माध्यमिक शिक्षाक्रम से, विशेष रूप से सीबीएसई से हटा दी गयी जो वर्षों के संघर्ष के बाद सर्वोच्च नयालय के निर्णय से आंशिक रूप से बहाल तो हुई, लेकिन उसके निर्णय के क्रियान्वयन में भी संस्कृत विरोधियों ने गन्दी चालें चली। फिर प्रधानमंत्री बने राजीव गांधी ओर उनकी १९८६ की नयी शिक्षानीति आये, जिसमें संस्कृत पूरी तरह उपेक्षित रही। उनके द्वारा स्थापित नवोदय विद्यालयों में संस्कृत को किसी भी रूप में और किसी भी स्तर पर कोई स्थान नहीं मिला। आज भी वहाँ यहीं स्थिति है। यही स्थिति केन्द्रीय विद्यालयों की भी हैं उनमें भी संस्कृत केवल आठवीं–नवीं कक्षा तक ही है। १०वीं में उसके विकल्प में दूसरी भाषाएं रख दी गयी हैं। पाठ्यक्रम का स्वरूप ऐसा बना दिया गया है कि छात्र इच्छुक होने पर भी संस्कृत नहीं पढ़ सकता है। उसके विकल्प में अंग्रेजी है, जो नौकरी के लिए छात्र को आवश्यक प्रतीत होती है। अन्य प्रदेशों की भी यही स्थिति है। कहीं संस्कृत के विकल्प में हिन्दी है, तो कहीं अंग्रेजी और कहीं कोई क्षेत्रीय भाषा है। माध्यमिक स्तर के मुख्य शिक्षाक्रम में संस्कृत इस प्रकार विस्थापित है और माध्यमिक स्तर पर संस्कृत का अध्ययन न कर पाने के कारण विश्वविद्यालयों में भी संस्कृत–छात्रों का भारी अभाव होता जा रहा है। संस्कृत नैमिकता और सदाचार की भाषा है, जिसकी देश में सर्वाधिक आवश्कयता है। संस्कृत के माध्यम से प्राप्य संस्कार तभी लाभप्रद हो सकते हैं, जब वह मुख्य शिक्षाक्रम में रहे, जहाँ से निकले स्नातक देश की विभिन्न सेवाओं में जाते हैं। संस्कृत का छात्र रह चुका पुलिस अधिकारी अपराध पर ईमानदारी से नियंत्रण करेगा। संस्कृतज्ञ अभियन्ता सड़क का निर्माण प्रामणिकता से करेगा। संस्कृत को मुख्य शिक्षाक्रम में स्थान देने के लिए हमें सुझाव देने के लिए किसी नयी विशेषज्ञ–समिति के गठन की आवश्यकता नहीं है। आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में बने शिक्षा–आयोग की संस्तुतियों पर पुनः ध्यान केन्द्रित करने का स्वयंमेव रास्ता निकल आयेगा।

संस्कृत की उन्नति की जब बात की जाती है, तो एक नये संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की बात हवा में उछाल दी जाती है। अभी उ.प्र. में, नैमिषारण्य मं महामना मालवीय जी के नाम पर संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव उ.प्र. शासन के पास विचाराधीन हैं विशेषज्ञ समिति ने अपनी संस्तुति दे दी है, लेकिन मेरी विनम्र सम्मति है कि नैमिषारण्य में नया संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित करने के स्थान पर एक पैरोहित्य एवं कर्मकाण्ड के आधुनिक विज्ञान के साथ समन्वयपूर्वक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना अधिक उपादेय सिद्ध होगी, ताकि वहाँ के तीर्थ पण्डितों–पुरोहितों के बच्चे लाभान्वित हो सकें। वहां नये संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना से विशेष लाभ नहीं होगा। कोई चतुर–चालाक एक व्यक्ति बस कुलपति बन जायेगा। किसी नये संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना से पूर्व, पहले से स्थापित संस्कृत विश्वविद्यालयों में संस्कृत के जनसामान्य तक प्रसार में कितना योगदान किया है, इसका आंकलन उचित रहेगा। नैमिष में माता आनन्दमयी जी ने पहले से ही एक वेद–पुराण केन्द्र स्थापित कर रखा है, लेकिन छात्रो एवं सुव्यवस्था के अभाव में उसका अस्तित्व भी संकट में है।

**संस्कृत भाषा के अस्तित्व पर एक अन्य बड़ा संकट है। वह संस्कृत के साथ अन्य भाषाओ के संदर्भ में भी है। मशीनी मूल्यांकन की सुविधा के लिए यूजीसी संस्कृत विषय की नेट परीक्षा भी आब्जेक्टिव ढंग से ले रही है, जिसमें केवल सही-गलत का चिन्ह लगाना होता है। इससे भाषाओं के ज्ञान का सही मूल्यांकन नहीं हो सकता। भाषा भाषणात् भवति-भाषा तो वही है। जो बोली जाये। जब संस्कृत में सम्भाषण और लेखन ही छात्र नहीं कर सकेंगे, तो संस्कृत भाषा कैसे जीवित रहेगी?**

अतः भाषाओं, विशेष रूप से संस्कृत भाषा के परीक्षण में आब्जेक्टिव प्रणाली को तत्काल यूजीसी एवं केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सेवा आयोगों से हटा देना परम आवश्यक है। आब्जेक्टिव प्रणाली से सफल अभ्यर्थी अध्यापक बनने पर अपने छात्रों को संस्कृत या अन्य भाषाओं का लेखन–संभाषण नहीं सिखा सकते। ऐसे सफल अभ्यर्थी संस्कृत के संदर्भ में तो पूर्णतया अभिशाप ही सिद्ध होंगे। निष्कर्षस्वरूप केन्द्र में प्रतिष्ठित सरकार से संस्कृत अनुरागियों की तत्काल यह अपेक्षा है कि:–

१. केन्द्रीय विद्यालयों और नवोदय विद्यालयों में १२वीं कक्षा तक संस्कृत

शेष पृष्ठ 10 पर

# ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

## जनसंख्या दिवस (११ जुलाई २०१८)

1. जनसंख्या के हिसाब से, १९४७ से पूर्व, अविभाजित भारत विश्व का सबसे बड़ा देश था।
2. अब खंडित भारत, विश्व में, दूसरा सबसे बड़ा देश है जबकि चीन प्रथम स्थान पर है।
3. चीन का क्षेत्रफल भारत से तिगुना है फिर भी उसने एक बच्चे की कठोर नीति कई वर्षों तक लागू रखी अब उसने दो बच्चों की नीति अपनाई है। उसकी जनसंख्या १३५ करोड़ है।
4. भारत की जनसंख्या १२५ करोड़ है जबकि विभाजन के बाद १९४७ में जनसंख्या केवल ३० करोड़ थी।
5. यहाँ के नेता अदूरदर्शी–दुर्बल–स्वार्थी–पदलोलुप और तुष्टीकरणवादी रहे अतः उन्होंने स्वैच्छिक परिवार नियोजन की नीति जारी रखी।
6. कमरतोड़ महंगाई–गरीबी–बेरोजगारी–आर्थिक पिछड़ापन होते हुए भी ६–६ अथवा ८–८ बच्चे अभी भी हो जाते हैं और बहु विवाह भी होते हैं।
7. मुस्लिम समाज के धार्मिक नेताओं ने नस्बन्दी–परिवार नियोजन को इस्लाम धर्म के विरुद्ध बताते हुए अपील की थी कि इसे नहीं अपनाया जाए। उन्होंने बहुविवाह का समर्थन किया।
8. देश की सभी छोटी–बड़ी पार्टियों के नेताओं ने वोट बैंक के लालच में उत्तर में कह दिया कि परिवार नियोजन–नसबन्दी का सरकारी कार्यक्रम पूर्ण रूप से स्वैच्छिक है अतः मुस्लिम इसे मानने के लिए बाध्य नहीं है। पार्टियों की इस उदारता का मुस्लिमों ने भरपूर लाभ उठाया।
9. १९४७ में मुस्लिमों का प्रतिशत १० था जो २०१४ में बढ़कर १६ हो गया है।
10. केरल में चर्च नेताओं ने चौथा और पांचवा बच्चा होने पर अनेक प्रकार की सुविधाओं की घोषणा की हुई है।
11. चर्च नेताओं ने संविधान की कमजोर धाराओं का दुरुपयोग करके वनवासियों का–दलितों का धर्मान्तरण अच्छे स्तर पर किया है जिसके फलस्वरूप पूर्वोत्तर भारत में तीन ईसाई राज्य बनाने पड़े। १९४७ में ईसाई २ प्रतिशत थे जबकि अब २०१४ में ३ प्रतिशत हो गए हैं।
12. संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट है कि यदि देश में स्वैच्छिक परिवार नियोजन –नसबन्दी की नीति जारी रही तो भविष्य में भी हिन्दू की संख्या गिरती रहेगी और देश की सत्ता मुस्लिम–ईसाई गठबन्धन के पास हो सकती है।
13. कई बुद्धिजीवियों ने कहा है कि देश तो पुनः मुस्लिमों के अधीन होना है अतः वे व्यर्थ में क्यों चिन्ता करें?
14. ९०६ वर्षों की लम्बी पराधीनता के बाद देश को तब स्वतन्त्रता मिली जब देश का विभाजन स्वीकार किया गया और ३/१.४ लाख वर्ग मील भूमि दी गई।
15. २६ मई २०१४ को प्रखर हिन्दूवादी नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राजग की सरकार बनी है किन्तु उन्होंने भी अल्पसंख्यक मामलों की मंत्री डा० नजमा हेपतुल्ला को केबिनेट स्तर का दर्जा देकर कोई प्रशंसनीय कार्य नहीं किया।
16. पुरानी प्रसिद्ध कहावत है "जिसकी संख्या उसका देश"
17. यदि सिन्ध–पश्चिमी पंजाब–बिलोचिस्तान–उत्तर पश्चिम सीमांत और पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं का बहुमत होता तो देश का १९४७ में विभाजन ही नहीं होता।
18. यदि कश्मीर घाटी में हिन्दुओं का बहुमत होता तो रियासत का विलय विवादास्पद ही नहीं होता।
19. अतः हिन्दू युवकों–युवतियों से अनुरोध है कि वे "हम दो–हमारे चार" की सोच व मानसिकता रखें और उस पर अमल करें तभी देश सुरक्षित रहेगा।

शेष पृष्ठ 7 का **लवजिहाद, धर्मान्तरण, निकाह.....**

तक को पहचानने या उनका सामना करने का साहस नही जुटा पाती। केरल में अखिला (धर्मान्तरण के बाद जिसे हादिया नाम दिया गया), का प्रकरण इसी प्रकार का है। धर्मोन्तरणपूर्वक निकास के बाद कहा जाता है कि इन लड़कियों का 'आई. एस.आई.एस', के लिए भी प्रयोग किया जाता है। इसे जानकर ही केरल के उच्च न्यायालय ने उसके निकाह को रद्द कर दिया। लेकिन विपक्षियों ने सर्वोच्च न्यायालय में अपील कर दी है। प्रकरण विचाराधीन है। दूसरा प्रकरण लद्दाख की एक बौद्धमतावलम्बी हिन्दू युवती का है। आज यह अपने माता–पिता तक को पहचानने से बच रही है। यह असहज स्थिति है। निकाह के बाद इन लड़कियों पर ब्लैकमेल की तर्ज पर इतना भारी दबाव बनाकर यह तक कहने के लिए विवश कर दिया जाता है कि वे अपनी मर्जी से यह निकाह कर रही है। बेचारे माँ–बाप पर उस समय क्या बीतती है, उसे न न्यायालय देखता है और न धर्मनिरपेक्षता के दूकानदार। इस सन्दर्भ में ताजा प्रकरण जोधपुर की पायल सिंघवी का है। निकाह के बाद इसे आरिफा नाम दे दिया गया है। यह साई बाग के मन्दिर के एक पुजारी की कन्या है और श्रद्धा से मन्दिरों में भजन–कीर्तन करती रही है लेकिन लव–जिहाद की धोखेबाजी का शिकार होकर किसी मुस्लिम युवक और उसके हममजहबी लोगों ने इसका इतना ब्रेन वाश कर दिया कि इसने न्यायालय में अपने माता–पिता के आँसुओं का लेखा–जोखा लेने तक से मना कर दिया।

शेष पृष्ठ 5 का **श्रीकृष्ण का पवित्र और महान....**

की नीतिमत्ता। श्री कृष्ण को पाण्डवों द्वारा कौरवों के साथ जुआ खेलना, जूए में सब कुछ हार जाना और वन में चले जाना–इन सब बातों का पता तब चला जब पाण्डव वन में रह रहे थे। श्री कृष्ण वन में पाण्डवों से मिलने गए। वहां जाकर उन्होंने कहा कि यदि मैं द्वारिका में होता तो हस्तिानापुर अवश्य आता और जूए के बहुत से दोष बताकर जुआ न होने देता। ऐसा था श्री कृष्ण का नैतिक बल और आत्मविश्वास। दूसरी और श्रीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, धृतराष्ट्र आदि बड़े लोग जुआ और जूए से जुड़े अन्य दुष्कर्म अपनी आँखों के सामने देखते रहे, पर उनमें से किसी में भी उसे रोकने का साहस न हुआ।

शेष पृष्ठ 9 का **संस्कृत मात्र अतीत की.....**

के पठन–पाठन की व्यवस्था की जाये।

२. संस्कृत भाषा के मूल्यांकन में यू.जी.सी. और विभिन्न सेवा–आयोग में चल रही आब्जेक्टिव प्रणाली तात्कालिक प्रभाव से समाप्त कर दी जाये।

३. नैतिकता तथा सदाचार–संवर्द्धन की दृष्टि से इंजीनियरिंग और मैडिकल शिक्षा के संस्थानों में भी संस्कृत के नीतिग्रन्थों की शिक्षा की व्यवस्था की जाये।

४. विदेशस्य भारतीय राजदूतावासों में नियुक्त का सामान्य ज्ञान कराकर ही भेजा जाये, ताकि वे वहीं यह कहने की स्थिति में न रहें कि 'माफ कीजिए, मुझे संस्कृत नहीं आती। वस्तुतः संस्कृत भारत की पहचान ही नहीं, उसकी पर्याय भी है।

शेष पृष्ठ 1 का **पाकिस्तान के छक्के छुड़ाने.....**

रक्षा विभाग ने इस सौदे की पुष्टि की है। उसका कहना है कि भारत की मांग पर अमेरिका ने इस सौदे को मंजूरी दी है। इससे दोनों देशों के रक्षा संबंध और प्रगाढ़ होंगे। साथ ही दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता, शांति और आर्थिक प्रगति में इजाफा होगा। अपाचे हेलीकाप्टर अमेरिकी सेना के एडवांस्ड अटैक हेलीकाप्टर प्रोग्राम का हिस्सा है। ४ दशक से यह अमेरिकी सेना का हिस्सा है, इसे दुनिया का सबसे खतरनाक मारक हेलिकाप्टर माना जाता है। अभी यह हेलीकाप्टर इजराइल, मिस्र और नीदरलैंड के पास है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि भारत सरकार अमेरिका, रूस सहित विश्व समुदाय के साथ मिलकर आंतक की फैक्ट्री पाकिस्तान से आंतकवाद को जड़ से समाप्त कर दें।

# हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का

## पाक ने एक बार फिर.....

जम्मू कश्मीर के सांबा जिले में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास पाकिस्तान रेंजर्स की गोलीबारी में सहायक कमांडेंट स्तर के एक अधिकारी सहित बीएसएफ के चार कर्मी शहीद हो गए और तीन अन्य घायल हो गए। चौबे ने संवाददाताओं से कहा कि हम हमेशा तैयार हैं। संघर्ष विराम हो या नहीं हो, सीमा पर प्रभुत्व बनाए रखा है और निगरानी में कमी नहीं आयी है। अधिकारी से सवाल पूछा गया था कि क्या सीमा सुरक्षा बल इसके लिए तैयार नहीं थे। क्या पाकिस्तान ने धोखा दिया इस संबंध में सवाल पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि संघर्ष विराम की घोषणाओं का सम्मान किया जाता है। उन्होंने कहा हमने इसका सम्मान किया और पाकिस्तान ने इसका सम्मान नहीं किया, पाकिस्तान ने जो किया वह उसका काम था और छल का जवाब देना हमारा काम है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारत सरकार से धोखेबाज पाकिस्तान को सबक सिखाने की मांग की है। उन्होंने मांग की है कि पाकिस्तान स्थित आंतकी शिविरों को ध्वस्त किया जाये।

शेष पृष्ठ 6 का

## राजनैतिक कर्मज्ञों का.....

ऐसे दोषपूर्ण व मानव विरोधी व्यवस्थाओं का क्या औचित्य हैं?

आज जब देश को अखंड रखने की चुनौती से जूझना पड़ रहा है तो ऐसे में राष्ट्रहित को सर्वोपरि मान कर सभी देशवासियों के लिए एक समान व्यवस्था को क्यों नही लाया जाता? क्या हमारे देश की लोकतांत्रिक प्रणाली कभी अल्पसंख्यकवाद, जातिवाद व दलितवाद से मुक्त हो पायेगी? क्या हमारे राजनैतिक दल कभी अपने स्वार्थो से ऊपर उठकर कोई राष्ट्रव्यापी सोच विकसित कर पायेंगे? आज राष्ट्र की एकता व अखंडता की रक्षा के लिये किसी भी वर्ग को दिये जाने वाले विशेषाधिकारों को प्रतिबंधित करने के लिये सार्वजनिक मंचों पर राजनेताओं, अधिकारियों, बुद्धि जीवियों व समाज सेवियों को वैचारिक मंथन करना होगा। साथ ही लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिये राजनीति को व्यापक राष्ट्रनीति में परिलक्षित करने के लिये राजनैतिक कर्मज्ञों के अभाव को भी दूर करना होगा। सामान्यतः यह धारणा बनी हुई हैं कि राजनीति में धन व बाहुबलियों का वर्चस्व बढ़ने से सुशिक्षित, समर्पित, सुयोग्य व समाज की सेवा में सक्रिय राष्ट्रभक्तो का अभाव हो रहा है। परंतु राजनीति से अपने को पृथक रखने वाले सभी बुद्धिजीवियों व उद्योगपतियों आदि को यह समझना चाहिये की देश की शासकीय व्यवस्था को कुशल व योग्य व्यक्तियों का मार्गदर्शन मिलें।

याद रखो आचार्य चाणक्य का विचार था कि राजनीति सबसे उत्तम व पुण्य कार्य है परंतु अगर सज्जन और योग्य व्यक्ति राजनीति में सक्रिय नही होगें तो उनको अपने ऊपर अयोग्य व दुर्जन व्यक्तियों द्वारा शासित होने के पाप का भागी बनना होगा।

शेष पृष्ठ 2 का

## श्रीराम की एक बहन.....

(शृंग) था अतः उनका यह नाम पड़ा। बाद में ऋषियशृंग ने ही दशरथ की पुत्र कामना के लिए पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाया था। जिस स्थान पर उन्होंने यह यज्ञ करवाये थे वह अयोध्या से लगभग ३६ कि.मी. पूर्व में था और वहाँ आज भी उनका आश्रम है और उनकी तथा उनकी पत्नी की समाधियाँ हैं। हिमाचल प्रदेश में है शृंग ऋषि और देवी शांता का मंदिर। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में शृंग ऋषि का मंदिर भी है। कुल्लू शहर से इसकी दूरी करीब ६० कि०मी० है। इस मंदिर में शृंग ऋषि के साथ्ज्ञ देवी शांता की प्रतिमा विराजमान है। यहां दोनों की पूजा होती है और दूर–दूर से श्रद्धालु आते हैं।


# साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

**विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं**

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

**हमारा संकल्प**

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

*केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।*
*आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।*


शेष पृष्ठ 4 का

## गुर्दों की अक्षमता एक.....

में (पेरीटोनियम) डाल दी जाती है। फिर उसके द्वारा लगभग दो लीटर डॉयलेसिस का द्रव पेट की गुहा में डालकर ६ घंटे के लिए छोड़ देते हैं। इस दौरान रक्त के विजातीय द्रव्य उसमें धीरे–धीरे मिल जाते हैं। इसके बाद द्रव को बाहर निकाल लेते हैं और पुनः डॉयलेसिस द्रव पेट की गुहा में नलिका द्वारा डालते हैं। यह प्रक्रिया प्रतिदिन ४ बार दुहराते हैं। इस तरह के डॉयलेसिस में रोगी अपनी सामान्य दिनचर्या जारी रखता है जबकि रक्त के डॉयलेसिस में ३–४ घंटे लगातार उसे बेड पर रहना होता है। यह विधि कम उम्र के बच्चों तथा मधुमेह के रोगियों के लिए ठीक रहती है, इस विधि से कई रोगियों को दस वर्ष तक इलाज दिया गया है। लेकिन पेट की गुहा में जीवाणुओं का संक्रमण होना इसका एक बड़ा दुष्प्रभाव है। आजकल इस तरह के डॉयलेसिस की स्वचालित मशीन बन गई है और इसे रात्रि में उपयोंग करते हैं ताकि रोगी दिनभर अपना कार्य कर सके।

**रक्त द्वारा डॉयलेसिस :** जैसा कि ऊपर बतलाया गया है कि इस प्रक्रिया में रक्त को शिरा द्वारा डॉयलेसिस मशीन में ले जाते हैं। वहाँ रक्त को छन्नकों में से गुजारा जाता है और यूरिया इत्यादि को रक्त से अलग कर छने हुए रक्त को वापिस शरीर में पहुँचा देते हैं। इस प्रक्रिया में रोगी के लिए अतिरिक्त रक्त की भी आवश्यकता पड़ सकती है। इस तरह का डॉयलेसिस एक दिन के अंतर से दिया जाता है या आवश्यक होने पर रोज भी डॉयलेसिस करते हैं।

**गुर्दों का प्रत्यारोपण (गुर्दे बदलना) :** कार्यक्षमता खो चुके गुर्दों का बेहतर इलाज, उनको बदलना ही है। लेकिन हमारे देश में गरीब या निम्न मध्यम वर्ग इस इलाज को करवा नहीं पाते। गुर्दा बदलने के लिए गुर्दा भी आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाता जिससे कई रोगी असमय मृत्यु के मुँह में चले जाते हैं।

जैसा कि विदित है, स्वस्थ व्यक्ति यदि अपना एक गुर्दा दान कर दे तो भी वह बगैर परेशानी के जीवन जी सकता है लेकिन तब भी लोग आसानी से तैयार नहीं होते। हाँ गरीबी के कारण कई व्यक्ति गुर्दे बेचने के लिए तैयार हो जाते हैं। वैसे मृत व्यक्ति के गुर्दे यदि तुरंत निकाल लिए जाएँ तो वे प्रत्यारोपण के काम आ सकते हैं। लेकिन हमारे देश में यह तरीका कम प्रचलन में है। जबकि इससे गुर्दों की कुल माँगे के एक बड़े हिस्से की पूर्ति की जा सकती है।

गुर्दों की जीर्ण अक्षमता में जब रोगी की जान पर बन जाती है तो बार–बार डॉयलेसिस न लेक गुर्दों के प्रत्यारोपण की सलाह चिकित्सकों द्वारा दी जाती है। गुर्दा दान में देने वाले और ग्रहण करने वाले रोगी का रक्त समूह समान होना आवश्यक होता है। साथ ही हामेन ल्यूको साइट एंटीजन का मिलान भी जरूरी होता है वरना रोगी अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह पाता है। प्रत्यारोपण के पश्चात् रोगी सामान्य जीवन जीता है। लेकिन उसे रोग प्रतिरोधकता कम करने वाली दवाइयाँ लेनी होती हैं।

**रोग से बचाव कैसे करें :** गुर्दे शरीर के महत्त्वपूर्ण और जीवन के लिए आवश्यक अंग हैं। लेकिन असावधानियों से बीमारियों अथवा गलत दवाइयों की वजह से वे असमय अपना कार्य करना बंद कर देते हैं। आजकल मिलावट, गलत खानपान और जानकारी के अभाव में भी गुर्दे खराब हो जाते हैं। अतः इनसे बचाव के लिए हमें निम्न सावधानियाँ अपनानी चाहिए–

- ❖ हाई ब्लड प्रेशर और डायबिटीज में गुर्दों की कार्यक्षमता शीघ्र प्रभावित होती है अतः इन बीमारियों का उचित इलाज लेकर उन पर नियंत्रण रखें।
- ❖ लंबे समय तक दवाइयाँ लेने के पूर्व चिकित्सक से सलाह लें।
- ❖ गुर्दों के संक्रमण और मूत्र नलिकाओं में रूकावट का एवं गुर्दों में पथरी का इलाज शीघ्र करवाएँ वरना इनका दुष्प्रभाव गुर्दों पर होता है।
- ❖ नमक कम मात्रा में, लेकिन पानी पर्याप्त मात्रा में खूब पीएँ।
- ❖ उल्टी, दस्त होने तथा शरीर में पानी की कमी होने पर यथाशीघ्र इलाज लें या रोगी अस्पताल में भर्ती हो। क्योंकि पानी की कमी गुर्दों के लिए खतरनाक साबित होती है।

इस तरह उपर्युक्त कुछ सावधानियाँ रखकर गुर्दों में आने वाली खराबियों अथवा बीमारियों से बचा जा सकता है। क्योंकि यदि एक बार गुर्दों में स्थायी बीमारी हो गई तो फिर जीवनभर तकलीफ होती रहती है।


**–: तत्काल ग्राहक बनें :–**

***सदस्यता शुल्क***

**वार्षिक.....150/- रुपये**
**द्विवार्षिक.....300/- रुपये**
**आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये**

**ड्राफ्ट या मनीआर्डर**
**''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।**

*पता :-* **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

*नोट :-* **केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।**

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

12 साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता निष्कर्ष दिनांक 11 जुलाई से 17 जुलाई 2018 तक

## यह भी सच है

# कश्मीर में अलगाववाद का बीज धारा ३७० और ३५ए

**कश्मीर** भारत का अभिन्न अंग है। भारतवासी अपने इस भूभाग के लिस बहुत संवेदनशील हैं। उन्होंने कश्मीर की रक्षा और पाक समर्थित आतंकवादियों से बचाने के लिए लगातार बलिदान दिये हैं। अक्सर सुरक्षा बल के शहीद जवानों के शव तिरंगे से लिपट कर आते हैं। १४ मई, १९५४ को कश्मीर को धरा ३७० द्वारा विशेष राज्य का दर्जा दिया गया, जबकि यह संविधान के भाग २१ का अस्थायी (कुछ समय के लिए दिया गया) विशेष अधिकार था। इसी से जुड़ी ३५ए के तहत कश्मीर की विधान सभा को अन्य राज्यों की विधायिका से अधिक अधिकार प्राप्त हैं, वह राज्य के स्थायी निवासियों और उनके विशेषाधिकारों को तय करती है। धारा ३७० और ३५ए हटाना हमारे लिए अपरिहार्य है। यह धारा उस समय के राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसादजी द्वारा जारी अध्यादेश से अस्थायी रूप से संविधान में जोड़ी गयी थी। इसका जमकर विरोध हुआ था। इसे पारित करने के लिए धारा ३६८ के अन्तर्गत संविधान संशोधन की प्रक्रिया को अपनाया नहीं गया था। संविधान में संशोधन के लिए संसद् के दोनों सदनों का दो–तिहाई बहुमत और आधे से अधिक विधान सभाओं का बहुमत आवश्यक है। बार–बार लगभग ४० बार राष्ट्रपति के अध्यादेश से धारा को बचाये रखा गया है। ३५ए के खिलाफ याचिका दायर की गयी है, इसे सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार कर लिया है। इस पर कोर्ट द्वारा सुनवायी के लिए तीन जजों की बेंच नियुक्त की गयी है। ३७० धारा को अधिकांश विशेषज्ञ राजनीतिक भूल मानते हैं। केवल पं. जवाहरलाल नेहरू का मानना था कश्मीर की जनता विशेष दर्जा पाकर जनमत संग्रह की स्थिति में भारत के पक्ष में वोट देगी।

नेहरू जी को प्रभाव में लेकर शेख अब्दुल्ला कश्मीर के लिए विशेषाधिकार की वकालत कर रहे थे जबकि संविधान निर्माता डॉ. आम्बेडकर दूरदर्शी थे। उन्होंने शेख अब्दुल्ला का विरोध करते हुए विशेषाधिकार का समर्थन नहीं किया। शेख फिर नेहरू जी से मिला। उन्होने उन्हें गोपाल स्वामी आयंगर के पास भेजा। नेहरू जी ने शेख के प्रस्ताव को अपनी प्रतिष्ठा से जोड़ लिया। अन्त में वही हुआ, जो शेख चाहता था। कमशीर के आज जो हालात हैं, यहाँ की संस्कृति वैसी नहीं थी। कश्मीरियत यहाँ की विशेषता है। यहाँ के बाशिंदों पर सूफीवाद का प्रभाव रहा है। वहाँ का जनसमाज पाकिस्तान के बजाय भारत के अधिक समीप था। अमरनाथ का उनके जीवन में बहुत महत्व है। आज भी जब अमरनाथ यात्रियों पर आतंकियों ने हमला किया, इसकी कश्मीरियों ने निन्दा की, ज्यादातर हिन्दू शैव मतावलम्बी हैं। अधिकतर मुस्लिम धर्मावलम्बी भी पहले हिन्दू थे, उनके पूर्वजों ने इस्लाम अपनाया था। शेख अब्दुल्ला के पूर्वज भी पहले सारस्वत ब्राह्मण थे। पत्रकार द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर में उमर अब्दुल्ला ने यह स्वीकार भी किया। जम्मू–कश्मीर के तीन भाग हैं कमश्मीर जम्मू और लद्दाख। कश्मीर के इतिहास से पता चलता है कि यहाँ हिन्दू और बौद्ध धर्म प्रमुख रहे। इस्लाम बाद में आया। जम्मू–कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र के पूर्वी हिस्से लेह के आसपास के बाशिदे बौद्ध और हिन्दू हैं। करगिल के आसपास शिया मुस्लिम समाज रहता है। पाकिस्तान में बसे शियाओं के साथ जिस प्रकार भेदभाव होता है। अक्सर उनकी मस्जिदों में बम फ़ोडे जाते हैं। आत्मघाती हमले होते हैं; लेकिन यहाँ ये लोग सुख से जीवन व्यतीत करते हैं। जम्मू में हिन्दू और सिखों का बाहुल्य है। कश्मीर मुस्लिम बहुल क्षेत्र है। यहाँ पाकिस्तानी समर्थित आतंकवाद ऐसा पनपा कि कश्मीरी पंडित और अन्य राजपूत, गुजर्र जाट और क्षत्रिय यहाँ से निकाल दिये गये। पाकिस्तान से आतंकी जेहाद के नाम से कश्मीर मे रक्तपात मचाते हैं। यहाँ के किशोरों को भी यह गुमराह करते हैं। ३५ए के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट मे याचिका दायर की गयी है, जिसका कश्मीर के राजनीतिक दल एक जुट होकर विरोध करने के लिए गुटबंदी कर रहे हैं। अलगाववाद पनपने का कारण भी यही धाराएँ मानी जा रही हैं। नेशनल काफ्रेन्स के लीडर फारूख अब्दुल्ला के बारे में कहा जाता है, जब उनके हाथ में सत्ता होती है, वह अलग भाषा बोलते हैं, जैसे भाषा भी बोलले हैं। फारूख अब्दुल्ला ने धमकी दी है, धारा ३५ए हटाने पर जन विद्रोह होगा। कश्मीर केराजनीतिक दल लामबन्द होने की कोशिश कर रहे हैं। मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने चेतावनी देते हुए कहा, यदि संविधान द्वारा विशेषाधिकारों में किसी प्रकार का बदलाव हुआ, तो कश्मीर में किसी के हाथ में तिरंगा नहीं दिखेगा। तिरंगे की शान बढ़ाने वाले सुरक्षा बल के जवान हैं उन्होंने तिरंगे की शान को बनाये रखा है। कश्मीर का अपना झण्डा संकट में है। वहाँ पाकिस्तान का झण्डा, अब तो इस्लामिक स्टेट का झण्डा भी गुमराह युवकों के हाथों में दिखायी देता है। इस स्थिति में पी चिदम्बरम् का अलगाववादी बनान राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पूर्णतया घातक है।

**साभार-राष्ट्रधर्म**

## कबिरा खड़ा बजार में

### जनता पस्त, सरकार मस्त

**केंद्र** की भारतीय जनता पार्टी सरकार ने २६ मई को चार साल पूरे कर लिए हैं। इन चार सालों को लेकर भारतीय जनता पार्टी के नेता और सरकार अपनी कामयांबी के कितने ही दावे कर लें, लेकिन हकीकत यही है कि हर मोर्चे पर केंद्र सरकार नाकारा ही साबित हुई है। हालत यह है कि आम आदमी को इंसाफ मिलने की बात तो दूर, खुद सर्वोच्च न्यायालय के चार जज़ों को इंसाफ के लिए जनता के बीच आना पड़ा। अपनी नाकामियों को छुपाने के लिए सरकार ने हमेशा गैर जरूरी मुद्दों को हवा दी है। अवाम ने शिक्षा की बात की, तो शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने की बजाय जेएनयू और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में विवाद पैदा किए गए। अवाम ने रोजगार मांगा, तो नोटबंदी कर उन्हें बैंक के सामने कतारों में दिन–रात खड़ा रहने पर मजबूर कर दिया गया। स्वास्थ्य सेवाओं की बात करें, तो गोरखपुर के मृत बच्चों की लाशें सामने आ जाती हैं। ऑक्सीजन की कमी से किस तरह वे तड़प–तड़प कर मौत की आगोश में चले गए। दरअसल मुट्ठीभर अमीरों को छोड़कर देश की अवाम का बुरा हाल है। आलम ये है कि तीज–त्यौहारों के दिनों में भी लोगों के पास काम नहीं हैं। बाजार में भी मंदी छाई हुई है। बेरोजगारी कम होने की बजाय दिनोंदिन बढ़ रही है। देश की अवाम त्रहिमाम–त्रहिमाम कर रही है और ऐसे में केंद्र सरकार के नेता अपने चार साल के शासनकाल की उपलब्धियां गिनाते नहीं थक रहे हैं। बेशक इन चार सालों में केंद्र सरकार का काफी भला हुआ है। उसके खजाने लगातार भर रहे हैं। पेट्रोल पर भारी एक्साइज ड्यूटी से केंद्र को भारी मुनाफा हुआ है। पिछले चार साल के दौरान इससे सरकार को १५० गुना ज्यादा राजस्व मिला है। गौरतलब है कि पिछली यूपीए सरकार की एक्साइज ड्यूटी में मोदी सरकार १२६ फीसद बढोतरी कर चुकी है। पेट्रोल पर जहां केंद्र और राज्य सरकारें मालामाल होती हैं, वहीं उपभोक्ताओं को भारी नुकसान होता है। केंद्र सरकार पेट्रोल पर एक्साइज डयूटी लगाती है और राज्य सरकार अपने स्तर से वैट और बिक्री कर लगाती हैं, जिससे इसकी कीमत बहुत ज्यादा बढ़ जाती है। भारतीय जनता पार्टी सरकार के शासनकाल में घोटाले भी खूब हुए हैं। सूचना के अधिकार के तहत भारतीय रिजर्व बैंक से मांगी गई एक जानकारी के मुताबिक साल २०१४–२०१५ से २०१७–२०१८ के बीच देश के अलग–अलग बैंकों से १६००० से ज्यादा धोखाधड़ी के मामले सामने आए हैं, जिनमें ६० हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का घोटाला हुआ है। पिछले चार सालों में देश की हालत बद से बदतर हुई है। लोगों में अविश्वास बढ़ा है। उनका चौन–अमन प्रभावित हुआ है। बढ़ती महंगाई ने लोगों का जीना दुश्वार कर दिया है। अब जब इस सरकार को चार साल पूरे हो गए हैं, तो ऐसे में लोग उन वादों के बारे में सवाल करने लगे हैं, जो भारतीय जनता पार्टी ने सत्ता में आने से पहले जनता से किए थे। तब लोगों को लगा था कि देश में ऐसा शासन आएगा, जिसमें सब मालामाल हो जाएंगे। मगर जब केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बन गई और महंगाई ने अपना रंग दिखाना शुरू किया, तो लोगों को लगा कि इससे तो पहले ही वे सुख से जिन्दगी गुजार रहे थे। ऐसा नहीं है कि अच्छे दिन नहीं आए हैं, अच्छे दिन आए हैं, लेकिन मुट्ठी भर अमीरों के लिए। प्रधानमंत्री ने उन चुनावी वादों को चुनावी जुमले कहकर टाल चुके हैं, लेकिन जनता टालने के मूड में बिल्कुल नहीं है।

**वीरेश त्यागी**
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 11 जुलाई से 17 जुलाई 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।